उपनिषद्-सुधा बिन्दु

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू। ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमाँ शान्तिमत्यन्तमेति।।

(कठोपनिषद् : १/१/१७)

(अग्निविद्या का फल बतलाते हुए यमराज ने कहाह्लह्ल) ''जो तीन बार अग्निविद्या का अनुष्ठान करता है, वह प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द (धर्मग्रन्थों) से प्राप्त ज्ञान (अथवा वेद, स्मृतियों और महात्माओं द्वारा प्राप्त शिक्षा; अथवा माता, पिता और गुरु द्वारा प्राप्त उपदेश) से सम्बन्ध जोड़ कर तथा वेदाध्ययन, यज्ञानुष्ठान और दान के कर्मों में रत रहता हुआ वह जन्म-मृत्यु से तर जाता है। वह ब्रह्मा से उत्पन्न देदीप्यमान, सर्वज्ञ और स्तवनीय अग्नि को जान कर परम शान्ति को प्राप्त होता है।

त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद् विदित्वा य एवं विद्वाँश्चिनुते नाचिकेतम्।
स मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।

(कठोपनिषद् : १/१/१८)

''वेदी के लिए कैसी और कितनी ईंटें चाहिए तथा अग्नि किस प्रकार प्रज्वलित की जानी चाहिएह्लह्लइन तीनों को जान कर जो नाचिकेत अग्निविद्या का तीन बार अनुष्ठान करता है, वह जन्म-मृत्यु के पाश को तोड़ कर तथा शोक-रहित हो कर अन्त में ॅस्वर्गलोक में आनन्द का अनुभव करता है।''

३१. 'भला बनो, भले कर्म करो'ह्लह्लयही सर्वोच्च साधना है।

३२. साधक जिस निश्रयणी पर चढ़ता है, उसकी हर सीढ़ी एक सद्गुण है।

३३. शम, एकता, प्रेम तथा सेवा ईश्वर-साक्षात्कार के प्रमुख सहायक हैं।

३४. इन्द्रियों का संयम, स्वार्थ का उन्मूलन, मुमुक्षुत्व, वैराग्य तथा संन्यास के बिना वास्तविक आध्यात्मिक उन्नति सम्भव नहीं है।

३५. काम, संकीर्णता, अभिमान, अश्रद्धा, नीचता, क्रोध तथा दुराचरणह्लह्लये साधक के लिए अनपेक्ष्य हैं।वाणी पर नियन्त्रण रखिए। मन का दमन कीजिए। बुराइयों का परित्याग कीजिए। हृदय को शुद्ध बनाइए। ध्यान कीजिए। आप शीघ्र ही ईश्वर-साक्षात्कार कर सकेंगे।

पूर्व-अंक से आगे :

श्री शिवानन्दमहिम्नः स्तोत्रम्

श्री बी. वेंकटरमणार्य

शरीरारण्येऽस्मिन् बहुविधसिरावल्लिगहने
मदक्रोधाद्यैः स्वैर्धृतविषयशस्त्रैरनुचरैः।
समायुक्तः कामः प्रतिवसति गर्जन् प्रतिदिनं
शिवानन्दाऽमुं भोः प्रदहतु भवान् ज्ञानशिखिना।।१७

अनेक प्रकार की सिरादि नाड़ि-गुल्मों से घिरे हुए इस शरीर-रूपी जंगल में विषय-रूपी शस्त्र धारण किये हुए मदक्रोधादि सेवकों से सज्जित कामदेव प्रतिदिन गरजता हुआ निवास करता है। हे शिवानन्द! आप ज्ञानाग्नि से इस काम को भस्म करें।

रिपूणां षट्कं मे तुदति हृदयं कण्टकमिव
पिशाचीवात्याशा पिशितकबलं वा ग्रसति माम्।
तटिल्लेखेव स्त्री नयनयुगलं मोहयति मे
ह्यतस्त्वां त्रातारं शरणमभजं संयमिवर!!१८

कामक्रोधादि छह शत्रु काँटे के समान मेरे हृदय को बींध रहे हैं, आशा-रूपिणी भयंकर पिशाची मुझको मांस के ग्रास के सदृश निगल रही है। नारी आकाश की बिजली की तरह मेरे नेत्रों को मोह रही है। इसलिए हे संयमशील स्वामी! आप रक्षक हैं। मैं आपकी शरण में हूँ, मेरी रक्षा करें।

दुराशाऽम्भोदोऽसौ विषयजलदो गर्जति मुहुः
कृपाझंझावातस्तव शमयतीमं ध्रुवमिति।
विचिन्त्याऽहं याचे कुरु मयि कृपामित्यतितरां
शिवानन्द! त्वं मां पदनतमवाऽनन्दनिलय!!१९

हे शिवानन्द! विषयों के जल को देने वाला यह आशा-रहित मेघ बार-बार गर्जन कर रहा है। यह निश्चय है कि आपकी कृपा-रूपी वायु इसको दूर कर रही है। मैं चिन्तित होता हुआ याचना करता हूँ कि आप मेरे ऊपर अतिशय कृपा करें। हे आनन्दालय! आप अपने चरणों में गिरे हुए मेरी रक्षा करें!

तृषार्तस्सारंगः पतति मृगतृष्णामभि यथा
यथा गौरन्नार्तो व्रजति कमलक्षेत्रसविधम्।
तथा मोहध्वान्तैः पिहितनयनोऽहं प्रतिभयैः
शरण्यं मन्ये त्वां प्रति विकिर बोधार्ककिरणान्।।२०

जैसे प्यास से व्याकुल मृग चमकती हुई रेत की ओर भागता है, अन्न का भूखा बैल जैसे कमल के तालाब की ओर जाता है, उसी प्रकार मैं भी मोहादि अन्धकारों के भय से बन्द आँखों वाला आपको ही शरण देने वाला मानता हूँ। आप ज्ञान-रूपी सूर्य की किरणों को फैलायें जिससे मैं देख सकूँ।

मुखं शुष्यत्यंगं पतति हृदयं मुह्यति करौ
न चेष्टेते पादौ न च विचलतश्चापि नयने।
मुहुर्यातो मूर्च्छां विषयविषभोक्तुर्मम मुने!
प्रदेहि त्वं मह्यं विमलतरबोधामृतरसम्।।२१

विष-तुल्य विषयों को भोगने से मेरा मुख सूख रहा है, शरीर गिर रहा है, मन मोह में फँस रहा है, हाथ कर्म-शून्य हो रहे हैं, पैर विचरण नहीं कर रहे हैं और आँखें भी बार-बार मूर्च्छा को प्राप्त हो रही हैं। इसलिए हे मुनिवर! आप मुझे अत्यन्त निर्मल ज्ञान-रूपी अमृत-रस दें।

न मे कश्चिद्गम्यस्त्रिजगति विना त्वां दितगतेः।
न मे कश्चित् त्राता विषयफणिदष्टांगकभृतः।।
न मे कश्चिद्दाता शमदमधनस्यातुरमतेः।
शिवानन्दस्वामिन्! मम भव शरण्यो यतिविभो!!२२

हे शिवानन्द स्वामी! इस संसार से जाने पर आपके बिना मेरा तीनों लोकों में कोई भी सहारा नहीं है, विषय-रूपी सर्प से डँसे हुए अंगों वाले मुझको कोई बचाने वाला नहीं है तथा शान्ति, इन्द्रियनिग्रह-रूपी धन के इच्छुक मेरा कोई भी दाता नहीं है। अतः हे यतिवर! मेरे शरणदाता बनो।

न मे कश्चित्काम्यो भवति जगति त्वत्त इतरो।
न वा त्वत्पादाब्जाल्ललितललितात्प्रार्थ्यमपरम्।।
न च त्वन्नाम्नोऽन्यो मधुरमधुरो मन्त्र इति ह।
शिवानन्दस्वामिन्! कुरु मयि कटाक्षान् सुभविकान्।।२३

इस संसार में आपके अतिरिक्त मेरा कोई भी इच्छित विषय नहीं है, अथवा आपके सुन्दर चरण-कमलों के अतिरिक्त न कोई प्रार्थनीय है और न ही आपके नाम के अतिरिक्त कोई सरस से सरस मन्त्र है। हे शिवानन्द स्वामी! मेरे ऊपर संसार से पार करने वाली कृपा-दृष्टि कीजिए।

न नौम्यन्यांस्त्वत्तो धनमदतमोदूषितदृशो।
न वा स्तौमि स्वामिन्! शमदमविहीनान् कुपुरुषान्।।
हृषीकाणां जेता जनशुभविधाता मम भवान्।
परित्राता भूयाज्जनिफलमणीयां त्वदनघ!!२४

हे स्वामी! आपके अतिरिक्त सम्पत्तिमद के अहंकार से जिनकी दृष्टि दूषित है, उनको मैं नमन नहीं करता हूँ और न ही शान्ति तथा इन्द्रियनिग्रह से हीन दुष्ट पुरुषों की स्तुति करता हूँ। इन्द्रियों को जीतने वाले आप ही मुझ जनता का कल्याण करने वाले विधाता हैं। हे निष्पाप! इस जन्म के वास्तविक फल के दाता आप ही रक्षक हैं। **(क्रमशः)**

(अनुवादक : श्री चण्डीप्रसाद बहुगुणा जी)

सन्तोष

पश्चिम में एक कहावत है कि 'सन्तुष्ट व्यक्ति सदा दावत का आनन्द लेता रहता है।' इसका अभिप्राय यह हुआ कि लालची व्यक्ति सदा अशान्त रहता है। लालच अग्नि के समान है, वह व्यक्ति को अन्दर-ही-अन्दर जला डालता है। लालच-रूप विष की प्रतिक्रिया के लिए सन्तोष ही अचूक औषधि है। सन्तोष से महान् और कोई भी सम्पत्ति उपार्जन करने योग्य नहीं है। सन्तुष्ट व्यक्ति सबसे अधिक सम्पत्तिशाली व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करता है। उसकी शान्ति का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उसे इस पृथ्वी का शक्तिशाली सम्राट् कहा जाये, तो अनुचित न होगा।

जिस व्यक्ति के पास एक करोड़ रुपया होता है, वह दश करोड़ के लिए लालायित रहता है। मन की तो यह विशेषता है ही कि वह एक पदार्थ को प्राप्त कर दूसरे पर कूद जाता है। इसी लोलुप मन के कारण ही संसार में प्रत्येक मनुष्य अशान्त हो कर मारा-मारा फिरता है। 'यह मेरा है', 'वह मेरा है', 'मैं उसका उपार्जन अवश्य करूँगा' इत्यादि इस प्रकार की भावनाएँ करता रहता है। इस भाँति मनुष्य विपत्ति-जाल में फँस जाता है और अशान्त बनता है। जहाँ लोभ, वहाँ काम-वासना और इसी प्रकार जहाँ काम-वासना, वहाँ लोभ भी अवश्य ही रहेगा। लोभ और काम के कारण बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, समझ में पत्थर पड़ जाता है, स्मृति पोली हो जाती है।

सन्तोष मनुष्य को आलसी नहीं बनाता है। इससे तो मन को शक्ति और शान्ति की प्राप्ति होती है। सन्तोष धारण करने से अनावश्यक और स्वार्थपूर्ण चेष्टाओं का प्रवाह रुक जाता है। सन्तुष्ट व्यक्ति का मन शान्त तथा एकाग्र होने से अधिक काम करने में समर्थ होता है।

स्वामी शिवानन्द

श्रद्धा तथा प्रार्थना

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

श्रद्धा

अज्ञात में विश्वास ही श्रद्धा है। श्रद्धा और भक्ति दोनों अनन्य हैं। श्रद्धा क्षति-पूर्ति करती है, श्रद्धा निर्माण करती है, श्रद्धा आश्चर्यजनक कार्यों को कर दिखाती है, श्रद्धा अचल भूधरों को भी चलायमान कर देती है। ईश्वर में अविकम्पित श्रद्धा के द्वारा मनुष्य हर प्रकार की कठिनाई को सहने के लिए रहस्यमयी शक्ति को प्राप्त करता है। अटूट श्रद्धा के द्वारा साधक असीम के सम्पर्क में आता है।

श्रद्धा दुर्बलों को बली बनाती, कायरों को बहादुर बनाती है। श्रद्धा असम्भव को सम्भव कर दिखाती है। श्रद्धा विवाद नहीं करती, विचार नहीं करती, तर्क नहीं करती, चिन्तन नहीं करती। तर्क तो एक अविश्वस्त, निःशक्त एवं सीमित यन्त्र है। श्रद्धा ईश्वरानुसन्धान के लिए प्रखर प्रदीप्त है। श्रद्धा के बिना जीवन शुष्क मरुस्थल की भाँति उजाड़ हो जाता है।

श्रद्धा के नष्ट होने पर जीवन की ज्योति विनष्ट हो जाती है। अटूट श्रद्धा के बिना जीवन निराधार ही रह जाता है। श्रद्धा ही जीवन के लिए जल है। श्रद्धा के नष्ट होने पर प्रत्येक वस्तु विनष्ट हो जायेगी। भगवान् में अटूट श्रद्धा रखें। भगवान् का नाम ही आपका एकमात्र आधार, आश्रय एवं अवलम्ब है। आपका शुद्ध हृदय ही भगवान् का निकेतन है।

प्रार्थना

भक्ति के डैनों पर सवार हो कर आत्मा का स्वर्गोन्मुख विचरण ही प्रार्थना है। प्रार्थना का अर्थ भिक्षा माँगना नहीं है। यह तो ईश्वर के साथ सायुज्यता प्राप्त करने के लिए आत्मा की प्रबल पिपासा है। प्रार्थना एवं आत्मत्यागमय जीवन के द्वारा आप मुक्ति के निकटतर आ सकते हैं। प्रार्थना हृदय को हलका बनाती तथा मन को शान्ति, शक्ति एवं शुद्धता से ओत-प्रोत कर देती है। प्रार्थना शक्तिशाली आध्यात्मिक प्रवाह है। प्रार्थना से बढ़ कर निर्मलता प्रदान करने वाली कोई भी वस्तु नहीं है।

सच्ची प्रार्थना ईश-कृपा को प्राप्त कराती है। प्रार्थना मस्तिष्क तथा बुद्धि को सूक्ष्म बनाती है। प्रार्थना मन को उन्नत करती है। यह उसे वहाँ ईश्वर के साम्राज्य में ले जाती है जहाँ तर्क का प्रवेश नहीं है। प्रार्थना महत् आध्यात्मिक प्रवाहों का निर्माण करती है और मन में शान्ति प्रदान करती है। नित्य-प्रति प्रार्थना करने से शनैः-शनैः आपका जीवन परिवर्तित एवं परिवर्धित हो जायेगा। प्रार्थना मन एवं बुद्धि को मल-रहित बना कर उन्हें सत्त्व से समन्वित करती है।

जब प्रार्थना की शक्ति से मन शुद्ध एवं सात्त्विक हो जाता है, तब बुद्धि भी तीव्र एवं सूक्ष्म हो जाती है। प्रह्लाद की प्रार्थना ने ही उसके शिर पर उँडेले गये तप्त तेल को भी शीतल बना दिया था। आसक्ति-रहित प्रार्थनाएँ अन्ततः मोक्ष की ओर प्रवृत्त करेंगी। ईश्वर निराकार है; परन्तु वह अपने सत्-संकल्प के द्वारा भक्तों की प्रार्थनाओं से प्रेरित हो कर नाना प्रकार के रूपों को धारण करता है। जहाँ प्रार्थना है, वहाँ आलस्य नहीं रह सकता। हार्दिक प्रार्थना मनुष्य को अग्रिम पथ का स्पष्ट प्रदर्शन कराती है। मोक्ष के विश्रान्त पथ में प्रार्थना ही एक विश्वस्त साथी है।

गायत्री-मन्त्र प्रार्थना का सर्वोत्तम रूप है। प्रेम अथवा प्रार्थना से रहित जीवन मरुस्थलीय नीरस वृक्ष के सदृश है। धूर्त, संकीर्ण तथा दुष्ट मनुष्य की प्रार्थना कभी नहीं सुनी जाती। प्रातः शय्या-त्याग करने के समय तथा सायं शय्या-ग्रहण करने के समय कम-से-कम पाँच मिनट प्रार्थना

कर लिया करें। पहले समस्त संसार की शान्ति एवं समृद्धि के लिए प्रार्थना करें, फिर अपने लिए। अपनी हृदयगत प्रार्थना की गम्भीरता में नित्य-प्रति भगवान् का योग प्राप्त करें। प्रार्थना हृदय से निसृत होनी चाहिए, मौखिक श्रद्धांजलि मात्र ही नहीं। शुद्ध एवं सच्चे हृदय से निसृत होने वाली प्रार्थना भगवान् के द्वारा तत्क्षण सुन ली जाती है।

सच्चाई के साथ, उत्सुकता के साथ, पूर्ण हृदय से, हृदय के अन्तरतम से प्रार्थना करें। तभी ईश्वर आपकी प्रार्थना को सुनेगा। कष्ट से मुक्ति-प्राप्ति के लिए प्रार्थना न करें। उसको सहने के लिए शक्ति एवं साहस की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें। अपने दोषों को दूर करने के लिए ईश्वर से शक्ति की प्रार्थना करें। प्रार्थना-विशिखों को सारी दिशाओं में प्रेषित करें। सम्भवतः उनमें एक तो अवश्य ही ईश-हृदय में प्रवेश पायेगा। आपका कर्तव्य प्रार्थना करना है और केवल प्रार्थना ही। भगवान् उसे सुनता है अथवा नहीं, इसकी चिन्ता मत करें। अनेकानेक प्रलोभनों का पारावार ही क्यों न उमड़ता हो, अपनी प्रार्थना में लगे रहें। आप प्रार्थना के द्वारा एक अभेद्य किले का निर्माण कर सकेंगे। प्रार्थना ही आपका एकमात्र आश्रय तथा अवलम्ब है।

(अनुवादक : श्री स्वामी ज्योतिर्मयानन्द सरस्वती)

सत्य

आप सत्य के जिज्ञासु और सदाचार के प्रेमी हैं। इसे 'धर्म-प्रेमी' कहते हैं। धर्म-प्रेमी वह है जो सदाचार को प्रेम करता है। सम्पूर्ण न्यायनिष्ठता की नींव सत्य और सत्यवादिता है। सद्-आचरण, सद्-चरित्र, सत्य-निष्ठा सबका अर्थ एक ही है। यह बारम्बार कहा गया हैह्न''जो धर्म का हनन करता है, धर्म उसको नष्ट कर देता है।'' इसका अर्थ यह है कि जब व्यक्ति धर्म का हनन करके अधर्मी बन जाता है, तब उसका अधर्म ही उसके सर्वनाश का कारण बन जाता है। इसके लिए किसी बाह्य शक्ति की आवश्यकता नहीं, स्वयं उसका अन्याय ही पर्याप्त है। वह स्वयं ही अपने सर्वनाश का, अपने कष्टों का निर्माता बन जाता है, जिन्हें उसने स्वयं अपने ऊपर थोप लिया होता है।

किन्तु जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसका रक्षक बन कर उसकी सुरक्षा करता है। जहाँ धर्म है, वहाँ सर्वत्र चरम सफलता है। यह धर्म सत्य पर आधारित है। सत्य परम धर्म है, क्योंकि ईश्वर सत्य है। और हम सत्य के जिज्ञासु हैं। यह उच्चतर जीवन का प्रवेश-द्वार है। सत्यता धर्म-परायणता की आत्मा है। धर्म-परायण जीवन का और सद्-चरित्र का आधार सत्य है। अतः सत्य-परायण होना जीवन में परम सफलता की आधारशिला है। सर्वाधिक आवश्यक हैह्नसत्य का पुजारी होना।

सत्य सर्वोपरि साधना है। सत्य श्रेष्ठतम अनुशासन है। सत्य उच्चतम तप है। सत्य महाव्रत है और भगवान् को प्रसन्न करने वाले समस्त फूलों में से यह सर्वश्रेष्ठ पुष्प है। यदि भगवान् का सत्य के पुष्प से पूजन किया जाये, तो वह परम कृपालु और परम सन्तुष्ट हो कर कृपा-वृष्टि करते हैं। इसलिए सब वांछित वस्तुओं में सर्वाधिक अभीष्ट अथवा सबसे आवश्यक सत्य ही है। अतः सत्य का मनन करें, सत्य का ध्यान करें, सत्य का चिन्तन करें और सत्य के उपासक हो जायें। इसी में आपकी सर्वोच्च भलाई है।

स्वामी चिदानन्द

संसार हमारा शत्रु नहीं है!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

अद्वितीय परब्रह्म परमात्मा हमारा लक्ष्य है। हम अपना आध्यात्मिक जीवन इस बाह्य जगत् के बीच में रहते हुए जी रहे हैं। अतः हम इस आन्तरिक आध्यात्मिक जगत् के साथ-साथ उस बाह्य आध्यात्मिक आयाम में भी कार्यरत रहने को विवश हैं जो कि उसी परब्रह्म की स्थूल, भौतिक और विविधतापूर्ण अभिव्यक्ति ही है।

यह दो परस्पर भिन्न-भिन्न प्रतीत होने वाले तत्त्वों में रहते हुए हमें इन दोनों के बीच के परस्पर के सम्बन्ध के विषय में ध्यान रखने की आवश्यकता है। क्या यह हमारे जीवन में नकारात्मक तत्त्व के रूप में केवल सहन करना अथवा कष्ट समझते हुए झेलना पड़ेगा या कि इसे एक अन्य दृष्टि से देखा जाना चाहिए? क्या यह इस रूप में समझ लेने के, उपयोग में लाये जाने के और लाभान्वित होने के लिए हैं कि यह दो भिन्न रूप होने पर भी परस्पर एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं।

इस सम्बन्ध में क्या प्रकृति हमें कुछ सहायता कर सकती है, हमें कुछ अन्तर्दृष्टि, कोई निर्देशन दे सकती है क्या? जहाँ-कहीं भी द्विविध तत्त्व होते हैं, वहाँ क्या विरोधाभास का होना आवश्यक है? या कि दो तत्त्व, दो आधे तत्त्व के रूप में होते हैं, जो अन्ततः मिल कर एक-दूसरे के पूरक बन कर पूर्णता को प्राप्त होते हैं ? वास्तविक स्थिति क्या है?

गीता में हमें बताया गया है कि हमें तीनों गुणों में व्यवहार करना पड़ता है; क्योंकि हम प्रकृति में हैं और प्रकृति तीनों गुणों से बनी है। अतः ये हमारे जीवन का हिस्सा हैं। सत्त्वगुण व्यक्ति को ऊपर की ओर ले जाता है, रजस् सम रखता है और तमस् व्यक्ति को नीचे की ओर ले जाता है। ये परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं; किन्तु वास्तव में तीनों आवश्यक हैं और तीनों के अपने-अपने कार्य-क्षेत्र हैं। ये तीनों ही अनिवार्य हैं।

यदि हम प्रकृति को ध्यान से देखें, तो हमें ज्ञात होगा कि वृक्ष धरती पर इसलिए खड़ा रहने में समर्थ हो सकता है; क्योंकि उसकी जड़ें धरती में गहरी उतरी होती हैं और साथ ही जड़ें धरती को दृढ़ता से पकड़े रहती हैं। मानो जड़ें उसका गठन करती हों और धरती उसे दृढ़ता से खड़ा होने में सक्षम करती हो। इसमें द्विविधता है, तथापि यह दोनों के लिए लाभकारी है। वृक्ष के लिए धरती अनिवार्य है, तो वृक्ष भी धरती के लिए लाभकारी है।

हम विविधताओं से घिरे हुए संसार में रहते हैं। क्या वे सब अनिवार्य हैं? अथवा क्या वे अनावश्यक हैं? क्या वे सब हमारे आध्यात्मिक उत्थान में बाधक हैं? वास्तव में वे हैं क्या? यदि वे अनावश्यक होतीं, तो भगवान् उनकी रचना न करते। यदि वे आवश्यक हैं, तो उनका अवश्य ही कोई-न-कोई उद्देश्य होगा। क्या है उनका उद्देश्य? क्या हमारे आध्यात्मिक उत्थान में बाधा पहुँचाना? इतनी अधिक बाधाएँ, इतनी अधिक कष्टप्रद वस्तु-स्थितियाँ बन जाना? हमें इस पर निश्चित रूप से गहराई से सोचना चाहिए और अपने इस चिन्तन द्वारा लाभ उठाना चाहिए।

कई बार परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले तत्त्व एक उद्देश्य-विशेष की पूर्ति कर देते हैं; वे हमारे भीतर कुछ विशेष क्षमताएँ, कुछ विशेष निश्चय, कुछ विशेष गुणात्मक तत्त्व उत्पन्न कर देते हैं जैसे कि इस प्रकार के दृढ़ संकल्पों को उत्पन्न कर देनाह्नह्न''मैं निश्चित रूप से इस पर विजय प्राप्त करूँगा!'' ये एक चुनौती के रूप में आते हैं और तब आपको अपनी विवेक-बुद्धि का प्रयोग करना होता हैह्नह्नइस चुनौती का किस प्रकार सामना करके विजय प्राप्त की जाये। ये ऐसे

तत्त्व हैं जो हमारी मानसिकता में बहुत-सी सकारात्मक बातें लाते हैं। हम इन्हें चुनौती के रूप में स्वीकारते हैं और चिन्तन-मनन करने में बुद्धि का उपयोग करते हैं कि इनसे कैसा व्यवहार किया जाये। ये हममें संकल्प लेने और निश्चय करने की दृढ़ता उत्पन्न करते हैंह्न ''हम निश्चित रूप से इन पर विजयी होंगे!''

इस प्रकार ये हमें भीतर से बहुत-सी ऐसी बातों के लिए प्रेरित करते हैं, जो अन्यथा नहीं होने वाली थीं। हम निरुत्साही और अनुद्योगी ही रहते। क्योंकि वे हमारे अन्तःकरण को प्रेरणा देने का कार्य करते हैं, अत: पूरी तरह से नकारात्मक नहीं प्रतीत होते, वे एक सकारात्मक और रचनात्मक उद्देश्य की भी पूर्ति करते हैं जो कि स्वयं अपने-आप ही हो जाता है।

दो चप्पुओं के बिना नौका नहीं चल सकती। नौका के बिना चप्पू व्यर्थ हैं, उनका कोई अन्य काम ही नहीं है। जब दोनों एक-साथ मिलते हैं, तो हमें नदी पार करने में सहायक बनते हैं। ऊपर और नीचे के दाँतों में परस्पर कोई शत्रुता नहीं है। भोजन को ठीक से चबाने के लिए दोनों की आवश्यकता है। सम्भवतया हमें अपने जीवन तथा बाहर और भीतर की इन सब वस्तु-परिस्थितियों और तत्त्वों को इसी रूप में देखना चाहिए। भगवान् परम ज्ञान स्वरूप हैं, उन्होंने कुछ भी गलत अथवा अनुचित नहीं किया है।

अन्य सब प्राणी भले ही कितने बलशाली, समर्थ और शक्ति सम्पन्न हों, जब आगे बढ़ रहे हों और सामने कोई रुकावट आ जाये, तो अपनी दिशा परिवर्तित कर देते हैं। केवल मनुष्य ही कहता है कि वह कैसे इसे दूर हटा सकता है, इस पर विजयी हो सकता है। वह अपनी दिशा बदलने की नहीं सोचता। वह ऊपर की ओर बढ़ने वाले अपने कदमों को बढ़ाये चले जाने की सोचता है। नदी आ गयी, उस पर पुल बना कर पार करो। गाड़ी के रास्ते में पर्वत आ गया, तो उसके भीतर से सुरंग बनाओ ! सम्भवतया इससे हमें कुछ सीखना चाहिए कि केवल मानव ऐसे करता है, और कोई प्राणी नहीं।

अतः प्रत्येक वस्तु-परिस्थितियाँ इसीलिए दी गयी हैं, क्योंकि वे आवश्यक हैं। वे हमारी परीक्षा लेती हैं, हमें देखती हैंह्नहम कहाँ तक सचमुच गम्भीर हैं? हमारा निश्चय किस सीमा तक दृढ़ है? हमारी जिज्ञासा का स्तर क्या है? यह कितना यथार्थ, सच्चा और प्रामाणिक है? अतः ये आवश्यक हैं। ये हमें चुनौती देती हैं। ये हमें अपने आध्यात्मिक जीवन का अनुमान लगाने का रास्ता भी बताती हैं। इस प्रकार यह हमारी सार्थक प्रगति में अपना योगदान देती हैं।

यदि हम इन्हें समझना और इस दृष्टि से देखना आरम्भ कर दें, तो हमारी इनके प्रति होने वाली प्रतिक्रिया भी बदल जायेगी। तब फिर जब भी ऐसी नकारात्मक परिस्थितियाँ आ कर हमें परेशान करेंगी, तब हम इतनी जल्दी निराश हो कर या घबरा कर अपनी उन्नति के प्रति सशंकित नहीं हो जाया करेंगे। हम जब समझने लगेंगे कि यह सभी कुछ आवश्यक है, तब फिर हम आत्म-विश्वास खो कर दिल छोटा नहीं किया करेंगे। ये हमारी परीक्षा ले कर हमें प्रशिक्षित करने के लिए ही आती हैं, ये हमारे भीतर सोयी पड़ी शक्तियों को जाग्रत करने के लिए हैं। हमारे लिए ये चुनौतियाँ हैं।

जब इस रूप में देखा जाता है, तब एक पूरा नया दृष्टिकोण आपके समक्ष आ जाता है। आप उनकी ओर विवेकपूर्ण रूप से बढ़ते हैं। उनके प्रति होने वाला सारा व्यवहार सकारात्मक हो जाता है। आपका समस्त जीवन, आपका आध्यात्मिक जीवन और साधना सब नया विचार, नया रूप ले लेते हैं। अब यह नकारात्मक रूप में प्रतिक्रिया नहीं दिखाते, सकारात्मक रूप में कार्यान्वित होते हैंह्न ''भगवान् ही यह सब कर रहे हैं, ये भी आवश्यक हैं। मुझे निश्चित रूप से यह समझना चाहिए कि मैं इनका किस प्रकार उपयोग कर सकता हूँ, कैसे इनसे लाभ उठा सकता हूँ।''

अतः यह सारा दृष्टिकोण चिन्ता, असुरक्षा की भावना या संशय भावना का ही नहीं है, प्रत्युत यह अत्यन्त सकारात्मकता और समझ-बूझ का दृष्टिकोण है। यह रचनात्मक और सक्रियतापूर्ण है तथा यह दृष्टिकोण अपने-आपमें ही एक आगे बढ़ने वाली गतिशीलता का

निर्माण करता है। इसी दृष्टि के प्रकाश में इस जगत् को देखना चाहिए, जिसमें रहते हुए अपनी साधना को चलते रखना है। यदि हम ऐसा करते हैं, तब फिर यह संसार हमें एक दूसरा अर्थ लिये हुए दिखता है, तब यह हमारा विरोधी या शत्रु नहीं लगता।

किन्तु धर्मग्रन्थों ने फिर इसका दूसरा ही चित्र क्यों प्रस्तुत किया है? वे इसे माया, एक जाल, एक बन्धन कहते हैं। उन्होंने इसे एक ऐसा वन कहा है जहाँ आप भ्रमित हो जायेंगे, एक ऐसा जाल कहा है जिसमें आप फँस कर रह जायेंगे। यह कहने का भी उनका एक उद्देश्य है। यह सब इसलिए कहते हैं कि आप सावधानी से ध्यानपूर्वक चलें। क्योंकि यदि आपमें विवेक और ज्ञान नहीं है, तब ज्ञान-विवेक के अभाव में आप इसे बन्धनकारी बना लेंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि यह बन्धन है, ये तो हमें यह बताने के लिए हैह्वह्व''यहाँ ये कुछ वस्तु-परिस्थितियाँ हैं जो महत्त्वपूर्ण हैं; किन्तु यदि आप इनके साथ बुद्धिमत्ता से व्यवहार नहीं करेंगे, तो ये आपके लिए भार बन जायेंगी। अतः अपनी आँखें खुली रखें और सावधानी से ध्यानपूर्वक आगे बढ़ते जायें।''

जब मानव अभी विकास के निम्न स्तर पर था और मनुष्य में विवेक अभी पूरी तरह से जाग्रत नहीं हुआ था, तब ऐसा नकारात्मक चित्र खींचना ही आवश्यक रहा होगा; किन्तु अब इसकी आवश्यकता नहीं है। अतः यदि हम अब भी उन्हीं विचारों का अपने जीवन में समावेश रखते हैं, तो केवल यह समझते हुए ही रखते हैं कि निर्भीकता से साधन-पथ पर आगे बढ़ते हुए भी, ध्यानपूर्वक आगे बढ़ना सदा ही अच्छा है; क्योंकि आध्यात्मिक पथ में एक सीमा तक सँभल के रहना बहुत अच्छा है। जब हम इस संसार और इसके वस्तु-पदार्थों को अपने आध्यात्मिक जीवन और उसके प्रशिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनाते हैं, तो इतनी सावधानी रखना तो आवश्यक है ही।

अतः संसार हमारे लिए बाधा और शत्रु न रहे, इसके लिए संसार से व्यवहार करने का ढंग यह है कि इसके साथ का पारस्परिक सम्बन्ध सकारात्मक दृष्टिकोण ले कर होह्वह्वसभी वस्तुओं का उपयोग भलाई के लिए हो। परमात्मा की कृपा और गुरु के आशीर्वाद हमें इस योग्य बनायें कि हम इस प्रकार ही कर सकें! ईश-कृपा आप सब पर हो!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

स्वामी शिवानन्द जी के आठ स्वर्णिम उपदेश

१. निष्काम कर्मयोग के द्वारा मन तथा हृदय को शुद्ध बनायें।

२. उग्र निष्काम सेवा, धारणा तथा ध्यान के अभ्यास के द्वारा मन तथा इन्द्रियों को अनुशासित करें।

३. अनुशासन के द्वारा इच्छा-शक्ति का विकास अधिक अंश तक करें।

४. उचित रूप से साधना का प्रारम्भ करें। स्थिर क्रमबद्ध साधना के द्वारा शनैः-शनैः मन तथा इन्द्रियों को नियन्त्रित करें।

५. तीव्र मुमुक्षुत्व रखें। अपने संकल्पों में दृढ़ बनें। अन्तर से शक्ति प्राप्त करें। साधन-चतुष्टय से सम्पन्न बनें।

६. प्रार्थना, जप, ध्यान, कीर्तन तथा स्वाध्याय में लगे रहें।

७. उत्साह तथा साहस के साथ चलते रहें। भौतिक इच्छाओं का परित्याग करें।

८. जीवन मनुष्य में जागृतियों का क्रम है। भगवान् में अविचल श्रद्धा रखते हुए बढ़ते चले चलें। सर्वत्र भगवान् की सत्ता का भान करें। सभी कर्मों में भगवान् के हाथों का अनुभव करें। आराम से रहें। अपने क्षुद्र अहंकार को भगवान् को अर्पित कर दें।

स्वामी शिवानन्द तथा आध्यात्मिक नव–जागरण ५

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

स्वामी शिवानन्द की कार्य–प्रणाली

कहा जाता है कि सिद्ध उस पारदर्शी विशुद्ध स्फटिक के समान होता है, जिसका अपना कोई रंग नहीं होता; परन्तु जो सन्निकट लायी गयी वस्तु की ही झलक ग्रहण कर लेता है। उससे बालक के संग बालवत्, वयस्क और वृद्ध के संग वयस्क और वृद्ध की भाँति और अज्ञानियों से ज्ञान–शून्य की भाँति आचरण करने, बोलने और व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है। किसी विशेष स्वार्थ, उद्देश्य, प्रयत्न अथवा इच्छा से अननुप्रेरित इस नैसर्गिक आत्माभिव्यंजना के मूल में निहित विचार अपनी वास्तविक प्रकृति से उस प्रभु–इच्छा का अत्यन्त निकट से अनुसरण करना है जो प्रत्येक प्राणी में अन्तर्भूत और क्रियाशील है तथा जिसमें न किसी के प्रति पक्षपात है, न पूर्वाग्रह, न अभिरुचि और न दुर्भावना। उनकी रचनाएँ बुद्धि और विवेक के निर्देशक सिद्धान्तों का निरूपण करने वाली उतनी नहीं हैं, जितनी कि वे आध्यात्मिक जीवन की विधियों के लिए व्यावहारिक निर्देश हैं। वे जिज्ञासुओं को सीधे प्रभावित करती हैं, भले ही उन्होंने उन दशाओं और आन्तरिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में पहले कभी ध्यानपूर्वक न सोचा हो जिनके द्वारा प्रेरित हो कर वे प्रकृति में छिपे परन्तु प्रकृति से उच्च तत्त्व के अन्वेषण के लिए आन्तरिक पुकार द्वारा आध्यात्मिक जीवन–यापन करने को प्रस्तुत हुए। उनकी रचनाओं में न वाग्जाल है, न पर्यायोक्ति, न सतही कथन अथवा अनावश्यक स्पष्टीकरण; प्रत्युत् जिज्ञासुओं को सूचनाएँ मात्र देने की अपेक्षा, साधना में प्रत्येक पग पर प्रबुद्ध और निर्देशित करने के लिए उनकी रचनाएँ सभी प्रकार की रहस्यमयता और अस्पष्टता से रहित एक सुस्पष्ट और सुनिश्चित पथ हैं। उनकी शैली और अभिव्यंजना में असाधारण सरलता है, जो एक ऐसे हृदय की भावना से उमड़ी है, जिसने न केवल पूर्णत्व की झलक देखी है और ब्रह्मानुभूति की है, प्रत्युत् जो मानवीय कष्टों और उसके अप्रतिहत अज्ञान की गहराई को देखने की अन्तर्दृष्टि रखता है तथा मानव–जगत् को (जो बाह्यतः समाज, राष्ट्र और विश्व में विस्तारित है) सामान्य सन्तुलित रूप में नैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने हेतु भी यापन करने के लिए प्रबोधन देने की आवश्यकता अनुभव करता है। उनके उपदेशों का सम्पूर्ण संग्रह प्रबल आध्यात्मिकता के इस स्वर से सशक्त रूप में अनुप्राणित है कि समाज में व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के सभी प्रकारों को अन्ततः एक ऐसे निर्मुक्त अस्तित्व के अभिज्ञान पर आधारित होना तथा उससे अर्थ और प्रेरणा ग्रहण करनी है, जो प्रकृति के दृश्यमान् और विचारणीय विधान से कहीं गहरा है। विश्व को पीड़ा और अज्ञान से मुक्त करने की गहरी व्यग्रता से उत्तेजित स्वामी शिवानन्द जी यथाशक्ति इस स्थिति का यथोचित रूप में सामना करने को कटिबद्ध हो गये और अपनी समस्त शक्ति को स्वयं अपने लिए निर्धारित इस उदात्त, उत्कृष्ट उद्देश्य में लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनके ग्रन्थ साहित्य, अध्यात्म, आचार–नीति, धर्म, रहस्यवाद, मनोविज्ञान, नीतिकथाएँ, कहानियाँ, धार्मिक प्रश्नोत्तर, योग, प्रार्थना एवं धार्मिक कृत्य आदि मानव से सम्पर्क स्थापित करने के प्रायः सभी साधनों के निदर्शी हैं।

स्वामी शिवानन्द के आध्यात्मिक ग्रन्थों को समझने के लिए ऐसा विद्यार्थी होना चाहिए जो न आध्यात्मिक मूल्यों से नितान्त अपरिचित हो और न आध्यात्मिक जीवन के शिखर पर पहुँच चुका हो। यम–नियम तथा साधन–चतुष्टय आचार और नीतिपरक योग्यताओं से सम्पन्न जो साधक मानसिक शुद्धता के कारण उच्चतर जीवन के अस्तित्व के सम्बन्ध में चेतावनी पा कर, उसे इसी जीवन में पूर्णतः समझने और प्राप्त करने के उत्साह से भर उठता है; परन्तु अपनी अक्षमताओं

और सन्देह के कारण तथा स्वयं को आगे बढ़ाने की आध्यात्मिक प्रणाली के ज्ञान के अभाव में अशान्त रहता हैह्वह्वउसे स्वामी शिवानन्द जी के ग्रन्थों की ओर उन्मुख होना चाहिए। उनके अधिकांश ग्रन्थ विश्व में दुःख की स्थिति और उसके स्वरूप के स्पष्ट सजीव अंकन से आरम्भ होते हैं। इस दुःख के कारण की खोज आध्यात्मिक जीवन-यापन की प्रथम पूर्वापेक्षा तथा मूलभूत अवस्था है। शंकराचार्य के समान श्री स्वामी शिवानन्द जी अत्यन्त निर्भीकतापूर्वक निराकार ब्रह्म की अद्वितीय सत्ता को स्वीकारते हैं और बुद्ध की भाँति जीवन में दुःख के लक्षणों का भी सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं और इस (दुःख) के कारणों का अति-सतर्कतापूर्वक निदान करते हैं। इस प्रकार वह मानव की मानसिक दशाओं का विस्तृत विश्लेषण तथा मानव की शान्ति और उसके चरम पूर्णत्व के मार्ग की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं तथा मानव की अन्तिम नियति की विशेषताओं का गौरवपूर्ण वर्णन करते हैं।

दार्शनिक जीवन

स्वामी शिवानन्द जी के अनुसार जीवन दर्शन का विकास है और दर्शन है अस्तित्व के रहस्य का उद्घाटन; अनुभूति के गहनतर निहितार्थों पर सर्वतोमुखी चिन्तन-मनन। यह मात्र तार्किक भवनों का निर्माण नहीं है। दर्शन अमूर्त कल्पनाकाश में विचरण करने की अपेक्षा जीवन की अतल गहराइयों की खोज है। स्वामी शिवानन्द जी स्वीकार करते हैं कि कोई भी दर्शन, यदि मनुष्य से असम्बद्ध है, तो निश्चित रूप से उसका अन्त असफलता में होगा और वह मानव की अधीर और जिज्ञासु प्रवृत्ति को कभी भी आकर्षित नहीं कर सकेगा। स्वामी शिवानन्द जी दर्शन, धर्म और जीवन को एक-समान मानते हैं, जो किसी जगतेतर अथवा भिन्न जगतीय संकल्पनाओं का संकेत नहीं करते प्रत्युत् मानव की क्षुधा और प्यास, यश और प्रभुत्व, जीवन-मूल्य, पर-चिन्ता तथा प्रत्येक के प्रति सम्मान और अन्ततः परम ब्रह्म में लीन हो जाने की एकमात्र आकांक्षा से संयुक्त हो कर चलते हैं। स्वामी शिवानन्द जी के जीवन और उपदेशों में उपयुक्त विवेक पर आधारित ऐसे दिव्य प्रेम के स्वर झंकृत होते हैं जिसमें मानव-मानव के बीच का व्यवधान टूट जाता है और जिसके द्वारा व्यक्ति सरलता से संसार में दूसरों के जीवन में भाग लेने का एक सुखद मार्ग खोज लेता है।

मानवीय प्रयत्नों के प्रतीत होने वाली एकमात्र नींव, अनन्त आशाएँ प्रभु के सार्वभौम नियम और व्यक्तिगत इच्छा के संयोग के निकटस्थ तथ्य की ओर नहीं तो कम-से-कम उसकी सुदूर सम्भावना की ओर संकेत करती ही हैं। प्रेम और आशा-आकांक्षा का यह आशय ही सार्वभौम सहानुभूति तथा परोपकारिता की निःस्वार्थ भावना पर आधारित सार्वभौम भ्रातृत्व, विश्व-शासन का आश्वासन दे सकता है। लोकोपकार का यह सिद्धान्त, वैयक्तिक मानव के चरम कल्याण से सम्बद्धता तथा मानवता को परब्रह्म, सर्वशक्तिमान् के अस्तित्व के प्रति जाग्रत करने की आवश्यकता का प्रखर प्रत्यक्ष बोधह्वह्वये ही स्वामी जी के जीवन और उपदेशों की विशेषताएँ हैं। कहा जाता है कि वेद अपरिमित हैं। इस उक्ति का अर्थ है कि ज्ञान असीम है तथा सृष्टि के आश्चर्य अभेद्य हैं। शास्त्र कहते हैं कि प्रभु-महिमा की कोई सीमा नहीं तथा प्रभु की प्रकृति को और प्रभु-प्राप्ति के पथ को समझने का प्रयत्न भी अनन्त है। स्वामी शिवानन्द ने इस महान् सत्य के महत्त्व को हस्तगत किया है; अतः उन्होंने यह कभी भी अनुभव नहीं किया कि आध्यात्मिक शिक्षाओं का अन्त हो सकता है या कोई आध्यात्मिक मार्ग की शिक्षा देने अथवा आध्यात्मिक निर्देशों के श्रवण से थक सकता है या कि जिस सावधानी, सतर्कता से प्रत्येक स्तर पर गुरु अपने शिष्य की देख-भाल करता हैह्वह्वउसकी कोई सीमा हो सकती है। समग्र जीवन आध्यात्मिक आशय से परिपूर्ण है, अतः प्रत्येक क्षण साधना का सुयोग है तथा आध्यात्मिक साधना के सम्बन्ध में लोभ, असफलताओं, मन और आत्मा के पथ-भ्रष्ट हो जाने एवं उनकी अवरुद्धता के प्रति अपार सावधानी रखने का अवसर है। दार्शनिक जीवन व्यावहारिक आचरण का कोई अद्भुत ढंग नहीं है, प्रत्युत् सही ज्ञान की स्वस्थ परिपक्वता तथा सत्य में गहन अन्तर्दृष्टि के साथ उत्तम रूप में समंजित, सही क्रियाओं का एक सामान्य प्रवाह है। **(अनूदित)**

शिव की कृतियाँ– मानव को दिव्य बनाने के लिए

डा. लक्ष्मी मीरचन्दानी

''मुझे इस धरा पर अपना सुमधुर सन्देशवाहक बना दें, जिससे कि समस्त विश्व में प्रसन्नता, शान्ति एवं आनन्द फैला सकूँ! मैं अपने इन देह, मन और इन्द्रियों को आपकी और आपके प्राणियों की सेवा में लगा सकूँ! मैं सभी को निज आत्म–स्वरूप मानते हुए प्रेम करूँ!''

(विश्व–प्रार्थना, 'योग–सार' से)

गुरुदेव जब स्वयं को अपने महान् लक्ष्य के लिए तैयार कर रहे थे, तब अपने हृदय की गहराइयों में से इस प्रकार प्रार्थना करते थे। हृदय की यह आतुर पुकार अनुत्तरित कैसे रह सकती थी? और जैसा कि हम सभी जानते हैं, ऐसा ही हुआ। यह सरल–सहज प्रार्थना हमें स्वामी जी की गतिविधियों का संकेत देती है; और हम जानते हैं कि उनकी सभी रचनाओं का केन्द्रीय अथवा मूल भाव है एकमात्रह्महमानवता की सेवा। यही कारण है कि मनुष्य की प्रसन्नता को बनाने और मिटाने से सम्बन्धित हर एक विषय पर उन्होंने लिखा है।

आधुनिक सभ्यता, जो अधिकाधिक भौतिकतापूर्ण एवं न्यूनातिन्यून आध्यात्मिक होती जा रही है और जिसका परिणामह्ह मानव के बढ़ते हुए कष्टह्महमें स्पष्ट दिखायी दे रहे हैं, उससे यह तथ्य निकलता है कि इस धरा पर हमारी प्रसन्नता का आधार आत्मज्ञान है। इसीलिए स्वामी जी की अधिकांश पुस्तकें दार्शनिक अथवा धार्मिक विषयों पर हैं। किन्तु उनका सहानुभूतिशील हृदय रक्ताश्रु बहाने लगता है जब अपने चारों ओर भयंकर रोगों से ग्रस्त लोगों को देखते हैं, और जिसका मुख्य कारण अज्ञानतावश स्वास्थ्य के सामान्य नियमों एवं सामान्य–सरल दवाइयों के विषय में जानकारी न होना है। इसके सुधार हेतु उन्होंने 'होम फ़िजीशियन' (घरेलू डाक्टर), 'होम नर्सिंग' (घरेलू इलाज), 'बाजार ड्रग्स' (बाजार की दवाइयाँ), 'केयर ऑफ़ आइज़' (आँखों की देख–रेख), 'फ़र्स्ट एड' (प्राथमिक चिकित्सा), 'हैल्थ एण्ड लौंग लाइफ़' (स्वास्थ्य एवं दीर्घायु), 'हैल्थ एण्ड डाइट' (स्वास्थ्य एवं भोजन), 'प्रैक्टीकल हाउसओल्ड रेमेडीज़' (व्यावहारिक घरेलू दवाइयाँ) तथा ऐसी ही बहुत–सी अन्य पुस्तकें लिखीं जिन्हें अत्यधिक पसन्द किया गया है।

गुरुदेव की एक अन्य इच्छा, इस मत–मतान्तरों से ग्रस्त संसार में एकता लाने की थी। उन्होंने सर्व–धर्म–सभा आयोजित की तथा सबके द्वारा अभिव्यक्त विचारों को प्रकाशित किया।

उनकी पुस्तकों में उनका उदार दृष्टिकोण प्रतिध्वनित होता है तथा उनकी अनेकों पुस्तकें दूसरे देशों की भाषाओं में अनूदित हुई हैं। उनके भक्तों की बहुरूपदर्शिता

तथा उनके आश्रम में विदेशी भक्तों की भीड़ ही उनके साहित्य के प्रति वैश्व-आकर्षण को प्रमाणित करती है।

एक ही लेखक के द्वारा विभिन्न विषयों पर इतनी अधिक पुस्तकें व्यक्ति को आश्चर्यचकित कर देती हैं; किन्तु इन सभी कृतियों के पीछे निहित उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को कृतज्ञता एवं श्रद्धा से भर देता है। यद्यपि स्वामी जी ने 'ब्रह्मसूत्र', 'उपनिषद्', 'गीता', 'कुण्डलिनीयोग', 'राजयोग' जैसे विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थों की रचना की है; किन्तु उनका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में धर्म अनुप्राणित करके उसमें निहित दिव्यता को प्रकट करना है। उनकी पुस्तकों में हम वेदों, पुराणों, सन्तों, मनीषियों और विद्वानों द्वारा प्रदत्त जटिल ज्ञान को अत्यन्त बोधगम्य रूप में तथा उनके निजी अनुभव सहित उपलब्ध कर लेते हैं।

गुरुदेव की श्रेष्ठता

किन्तु ये विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ ही उनकी उत्कृष्ट लेखक के रूप में प्रसिद्धि होने का अथवा उनके उत्कृष्ट योगदान का एकमात्र कारण नहीं हैं। ''वर्तमान समय के दुःखों तथा अधार्मिकता का कारण धार्मिक विश्वासों अथवा आध्यात्मिक सत्यों के प्रति लोगों का अज्ञान नहीं है, प्रत्युत् यह मुख्यतया इसलिए है कि लोग जिन आदर्शों को जान लेते हैं, उन्हें जीवन में उतारने की उनकी अक्षमता बढ़ती जा रही है।''

यहीं पर गुरुदेव की कृतियों का विलक्षण एवं अद्भुत मूल्य है। उनकी रचनाएँ अन्य सबसे श्रेष्ठ हैं तथा कुल मिला कर मानव मात्र की प्रसन्नता में उनका योगदान सर्वश्रेष्ठ है, इसका कारण हमें सहायता करने का उनका अथक प्रयास है कि हम उच्च आदर्शों को जी सकें और अपने एवं अपने कार्यों का, अपनी बौद्धिक मान्यताओं के साथ सामंजस्य बैठा सकें तथा इस प्रकार स्वयं अपने प्रति सच्चे बन सकें। यही उनका उद्देश्य है तथा उनके विपुल साहित्य की श्रेष्ठता का स्रोत है। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए, सभी आयु के तथा सभी प्रकार के लोगों के लिए, अनेक विषयों पर, विविध प्रकार से लिखा है। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में लिखा है। उनकी कृतियों में उनके गम्भीर तथा विनोदप्रिय, दोनों रूप अभिव्यक्त होते हैं। वे अच्छे और परिश्रमी को प्रोत्साहन देते हैं तथा बेतुके एवं गलत को फटकार देते हैं। उनकी प्रत्येक पुस्तक का अपना विलक्षण सौन्दर्य है तथा सबमें एक ही प्रेम की धारा सतत एवं अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित होती है। किसी भी पुस्तक का कोई भी पृष्ठ व्यक्ति खोल ले, सदैव एक-न-एक ऐसी पंक्ति अवश्य मिल जायेगी जो चिन्तन को जागृत करने वाली होगी, प्रश्न का उत्तर देने वाली होगी अथवा पीड़ित को शान्ति देने वाली होगी। स्वामी जी की कृतियाँ उत्साह एवं स्वाभिमान उत्पन्न करती हैं। वे व्यक्ति को प्रयास करने के लिए प्रेरित करती हैं। वे प्रत्येक वाक्य के द्वारा हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं। इसका एक उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत है :

''मन के ऊपर विजय प्राप्त करना हमारी योग-साधना का लक्ष्य होना चाहिए। यदि आप कष्ट और हानि में, क्रोध और द्वेष में, काम और लोभ में, घृणा एवं ईर्ष्या में अविचलित रह सकते हैं; यदि आप अहंकार और स्वार्थ का निरोध कर सकते हैं; यदि आप रुचिकर और अरुचिकर द्वारा शासित नहीं होते हैं; यदि आप समदृष्टि रखते हैं, विशाल हृदय एवं उदार मन रखते हैं; यदि सभी परिस्थितियों में उत्तम चरित्र एवं सद्व्यवहार बनाये रखते हैं; यदि आप अपनी आवश्यकताओं से बढ़ कर दूसरों की आवश्यकताओं को अधिक महत्त्व देते हैं और यदि आपका मन सदैव परमात्मा की सर्वव्यापक विद्यमानता के मनन में संलग्न रहता है, तब आप स्वयं को निश्चित रूप से कह सकते हैं कि आप वास्तविक एवं यथार्थ योग की साधना कर रहे हैं।''

उनकी अद्वितीय शैली का उनके साहित्य की सफलता में अत्यधिक योगदान है। यह संक्षिप्त, सुस्पष्ट एवं अत्यन्त अर्थपूर्ण है। वह देश-काल की दूरियों को इतने प्रभावोत्पादक ढंग से, सेतु-निर्माण ढंग से समाप्त कर देती है कि उनकी पुस्तकों को पढ़ते समय व्यक्ति को लगता है कि उनकी आवाज सुन रहा है तथा उनके चेहरे के भाव तक देख रहा है। 'साधना' पुस्तक उनके साहित्य की एक विशेष एवं अद्भुत कृति है। केवल यही नहीं, गुरुदेव की अन्य बहुत-सी पुस्तकों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही कहा जा सकता है।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

मान्यवर एकार्ट तथा श्री स्वामी शिवानन्द जी

श्रीमती पौला शुडल, स्विट्ज़रलैंड

श्री स्वामी शिवानन्द जी के सम्पर्क में आने के बाद ईसाई-धर्म के सम्बन्ध में मेरा ज्ञान कहीं अधिक गहन हो गया तथा मैं इन महान् गुरु के प्रति अत्यधिक आभारी हो गयी।

'दिव्य जीवन' का अपना कोई अलग पन्थ नहीं है, किन्तु यह सभी मत-मतान्तरों के सार का प्रतिनिधित्व करता है। जब व्यक्ति १३ वीं सदी के महान् ईसाई-सन्त, मान्यवर एकार्ट के सम्बन्ध में पढ़ता है, तो यह तथ्य सिद्ध हो जाता हैह्वह्व

उन्होंने कहा : ''मनुष्य अपनी आभ्यन्तरिक प्रशान्ति से बढ़ कर और कुछ नहीं दे सकता।''

शिवानन्द जी कहते हैं : ''अपनी भीतरी शान्तावस्था का जीवन जियें।''

एकार्ट : ''शारीरिक श्रम (सेवा) तथा नेक काम किये बिना कोई भी ईश्वर तक नहीं पहुँच सकता।''

शिवानन्द जी : ''भले बनो। भला करो।''

एकार्ट : ''जो सब-कुछ पाना चाहता है, उसे पहले स्वयं को और अपने सब-कुछ को समर्पित करना होगा।''

शिवानन्द जी : ''प्राणिमात्र के 'स्रोत और शक्ति' से माँगें। केवल 'वही' दाता हैं। 'वे' आपको कुछ भी, जो भी आप चाहें, दे सकते हैं (यदि आप अहंपूर्ण इच्छाओं को त्याग देंगे)।''

एकार्ट : ''आत्मा 'सर्वोच्च सत्' के शुद्ध मनन में प्रशान्तावस्था में लीन रहती है। शरीर भी गहन शान्ति में रहता है, जिससे कि प्रत्येक अंग स्थिर हो जाता है। आत्मा की कोई भी शक्ति क्रियाशील नहीं होती। इसकी सभी शक्तियाँ अन्तरतम में संकेन्द्रित हो जाती हैं।'' ह्वह्वयह ध्यानावस्था है। गुरुदेव शिवानन्द जी हमें बताते हैं कि यह कैसे करना है।

एकार्ट : ''यदि समस्त इन्द्रियों तथा समस्त संकल्पनाओं का पूर्णतया प्रत्याहार कर लिया जाता है तथा सम्पूर्ण वैयक्तिकता समर्पित कर दी जाती है तो भगवान् मनुष्य में प्रवेश कर जाते हैं।'' ह्वह्वक्या यही शिवानन्द जी ही नहीं कह रहे हैं?

एकार्ट : ''मनुष्य भले ही भगवान् के सम्मुख हो अथवा विमुख हो, भगवान् कभी भी उससे विमुख नहीं हैं।''

शिवानन्द जी : ''अपने जीवन के प्रत्येक पल में भगवान् की विद्यमानता को महसूस करें।''

एकार्ट : ''केवल आत्म-संयम का अभ्यास निरन्तर करते रहने से हम निम्न प्रवृत्तियों को समाप्त कर सकते हैं।''

शिवानन्द जी : ''आध्यात्मिक जीवन एक सतत संघर्ष का जीवन है। आपको निरन्तर संघर्ष-रत रहना होगा।''

एकार्ट : ''हे प्रभु! आप जो भी मुझे देना चाहते हैं और जैसे भी देना चाहते हैं, वही, वैसे ही दें।''

शिवानन्द जी : ''मैं आपका हूँ, सब-कुछ आपका है, आपकी इच्छा पूर्ण हो।''

हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास हमारे गुरुदेव हैं, जो हमें इन महान् सत्यों की याद दिलाते हैं। हमारी कामना है कि वे मानव-जाति को अपने यह अनमोल उपहार देते रहने के लिए अनेकों वर्षों तक हमारे साथ रहें!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

शिवानन्द-विजय ८

''आपके अन्तर्तम में एक आवाज है, जो कहती है : मैं शुद्ध चैतन्य ब्रह्म हूँ। अब इसे सुनें।''

श्री सुन्दरश्याम 'मुकुट'

सारांश : अंक २, दृश्य १ और २

गत दूसरे अंक के प्रथम दृश्य में दो नागरिकों के परस्पर वार्तालाप में डा. कुप्पुस्वामि के हँसमुख और बालवत् स्वभाव के साथ-साथ उनमें व्याप्त दैवी गुणों, यथाह्वह्वउदारता, सेवा-परायणता, परदुःखकातरता के अतिरिक्त उनके उच्चकोटि के डाक्टर होने का पता चलता है। इसके साथ ही इसी अंक के दूसरे दृश्य में अस्पताल में रोगियों का कम्पाउण्डर के साथ तथा बाद में डा. कुप्पुस्वामि का रोगियों से वार्तालाप दिखाया गया है जिससे रोगियों का डा. कुप्पुस्वामि की योग्यता में दृढ़ विश्वास तथा उनके प्रेमपूर्ण स्वभाव के प्रति गहन प्रशंसा दिखायी गयी है। डा. कुप्पुस्वामि का निर्धन रोगियों के साथ जहाँ अत्यन्त प्रेम एवं अपनत्वपूर्ण व्यवहार का भी पता चलता है वहीं उनकी धन के प्रति उपेक्षा भी दृष्टिगोचर होती है।

पात्र-परिचय

दूसरा अंक

।। तीसरा, चौथा और पाँचवाँ दृश्य ।।

नथुवा : मलाया में एक अत्यन्त निर्धन व्यक्ति

मुंशी : एक सेठ का मुनीम

डा. कुप्पुस्वामि : इस नाटक के नायक, प्रथम सुप्रसिद्ध दयावान् डाक्टर, फिर मानव-जाति को जागृत करने हेतु समर्पित सन्त

कलुवा : डाक्टर साहब का नौकर

शिव-पार्वती : डाक्टर के गुणों का तथा संसार की दशा का वर्णन करते हुए भगवान् अपनी शक्ति सहित

।। तीसरा दृश्य।।

स्थानह्वह्वमलाया के गरीबों का मुहल्ला

(नथुवा और मुंशी खैरातीलाल का प्रवेश)

(नथुवा एक गरीब व्यक्ति है, जिसके कपड़े फटे हुए हैं, मुख मलीन है, न तो पाँव में जूता, न सिर पर टोपी है। मुंशी जी की आँखों पर चश्मा लगा है, कान में पेंसिल, बगल में बही है, वस्त्र साधारण हैं)

नथुवाह्वह्वमहाराज! मैं बहुत गरीब हूँ, खाने के लाले पड़े हुए हैं। एक महीने की मोहलत और दिला दीजिए। जैसे भी होगा, अपना तन बेच कर पाँच सौ रुपयों का प्रबन्ध कर दूँगा।

मुंशीह्वह्व(नाक फुलाते हुए) ऊँह, यह बात तो मैं कई बार सुन चुका हूँ, अब कोई मोहलत नहीं दी जा सकती। सेठ जी ने दावा कर दिया है अगर कल तक रुपया नहीं पहुँचा तो तुम्हारा मकान सामान सहित कुर्क कर लिया जायेगा।

नथुवाह्वह्व(आँखों में आँसू भर कर) ऐसा न कहिए मुंशी जी, मैं बरबाद हो जाऊँगा, मेरे बाल-बच्चे भूखों मर जायेंगे। एक ही तो मकान है, यदि यह भी कुर्क हो गया तो रहने का कौन-सा ठिकाना होगा?

मुंशीह्वह्व(चश्मे के नीचे से देखते हुए) तो यह हम क्या जानें, रुपया मिलना चाहिए, चाहे किसी तरह दो, और आज ही दो।

नथुवाह्वह्वमैं आज कैसे दे दूँ महाराज? मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। कई दिन से काम पर नहीं गया, बीमार हूँ। खाट पर से आज ही उठा हूँ, आप मेरी यह प्रार्थना सेठ जी से कह दें। आज से तीसवें दिन तक मैं उनकी पाई-पाई चुका दूँगा। मुझ पर दया करें।

मुंशीह्वह्वखैर मैं तो कह दूँगा ही, परन्तु उनके कान पर जूँ तक न रेंगेगी। आज ही वे मुझ पर बहुत बिगड़े, कहने लगे कि नथुवा ने रुपया अभी तक क्यों नहीं दिया? तुम उससे माँगते नहीं होगे। या तो आज रुपया ले कर आओ, वरना उसके मकान पर कुर्की भेज दूँगा, और तुम्हें भी नौकरी से निकाल दूँगा। मैं भी क्या करूँ? मेरा तो यही काम था। या तो कल रुपया दो, वरना दोपहर १२ बजे कुर्की की प्रतीक्षा करना।

नथुवाह्वह्वहाय-हाय, मुंशी जी! मुझे बचाओ, मैं रुपया दूँगा, कृपा करके कुर्की न लाना। मेरी बात बिगड़ जायेगी। कल तक का समय दीजिए। मैं डाका डालूँगा, चोरी करूँगा, अपने को बेचूँगा, पर सेठ जी का रुपया चुकाऊँगा। मैं आपके पैर पकड़ता हूँ, कल तक और ठहर जाइए।

मुंशीह्वह्वखैर तुम्हारी दशा पर दया आती है। कल तक के लिए सेठ जी को किसी-न-किसी तरह अवश्य मना लूँगा, पर दोपहर बारह बजे तक रुपया अवश्य पहुँचा देना, वरना उसके पश्चात् जरा भी सुनवाई न होगी। अच्छा मैं तो जाता हूँ। (जाता है)

नथुवाह्वह्वअब मैं किसके पास जाऊँ? किससे माँगूँ? पाँच सौ रुपया कौन देगा? ओह! कितने निर्दयी हैं ये लोग, गरीबों का कुछ भी खयाल नहीं करते। (सोचता है) भगवान्! क्या तेरा यही न्याय है? अच्छा चलूँ, अपना भाग्य आजमाऊँ। (जाता है)

(पट-परिवर्तन)

।। चौथा दृश्य।।

स्थानह्वह्वमलाया शहर में एक कोठी का बरामदा

समयह्वह्वरात्रि

(डाक्टर कुप्पुस्वामि गाते हुए इधर-उधर टहल रहे हैं)

(गीत)

जग में आ कर सब भूल गया।
मन में कितने अरमान लिये,
तन में, मैं आकुल प्राण लिये,
आया आते ही मैं अपने,
चंचल मन के अनुकूल गया।

मैंने जग से नाता जोड़ा,
पर प्रभु से अपना मुख मोड़ा,
वैभव विलासिता में पल कर,
मैं देखो कैसा फूल गया।

अब इधर-उधर टकराता हूँ,
करनी पर खुद पछताता हूँ,
क्या करूँ हृदय में यह मेरे,
रह-रह तीखा चुभ शूल गया।
जग में आ कर सब भूल गया।

(स्वगत) संसार का सुख कितना मादक है। मनुष्य इसमें ऐसा मस्त है कि उसे अच्छे-बुरे का भी कुछ ज्ञान नहीं। दिन होता हैह्वह्वखा-पी कर बिता देता है या धन-संचय करने में लगा देता है। रात होती हैह्वह्वस्वप्नों की दुनिया में विचर कर अपने को भूल जाता है। इसी प्रकार उसकी आयु की घड़ियाँ यों ही मनोविनोद में बीत जाया करती हैं। भगवान् को स्मरण करने का समय जैसे उसके जीवन की डायरी में है ही नहीं। यदि कोई स्मरण करने के लिए कहता भी है तो उस पर ध्यान देना अपनी शान के विपरीत समझता है। कैसा उल्टा युग आ गया है प्रभो! ज्ञान-जैसे कठिन मार्ग का अनुसरण करना तो अलग बात, भक्ति-मार्ग की ओर भी कोई रुख नहीं करता।

(कलुवा नौकर का प्रवेश)

कलुवाह्वह्वसरकार! कोई दुपट्टे वाला बाबू आया है।

डाक्टरह्नह्नदुपट्टे वाला बाबू?

कलुवा ह्नजी, बुला लाऊँ?

डाक्टरह्नह्नहाँ! बुला लाओ।

(नौकर जाता है)

डाक्टरह्नह्न(स्वगत) इस समय कौन आया है, रात तो काफी हो चुकी है, शायद ग्यारह का समय है (कुछ सोच कर) कोई रोगी होगा, आने दो।

(नौकर के साथ नथुवा का प्रवेश)

नथुवाह्नह्ननमस्ते! डाक्टर साहब।

डाक्टरह्नह्न(उठ कर) नमस्ते महाराज! आइए। कलुवा! अब तुम जाओ।

(कलुवा जाता है)

कहिए, गरीब की कुटिया पर आने का कैसे कष्ट किया?

नथुवाह्नह्नआपसे कुछ...।

डाक्टरह्नह्नहाँ-हाँ, रुक क्यों गये? निस्संकोच कहिए, मुझे अपना ही मित्र समझिए।

नथुवाह्नह्नआपसे कुछ सहायता माँगने आया हूँ।

डाक्टरह्नह्नकैसी सहायता? जरा स्पष्ट कहिए।

नथुवाह्नह्नमुझे ५०० रुपये की आवश्यकता है, यदि कल तक इतने रुपयों का प्रबन्ध न हो सका, तो मेरे मकान पर कुर्की आ जायेगी। मैं सदा के लिए बरबाद हो जाँऊगा। मेरी रक्षा कीजिए, डाक्टर साहब!

डाक्टरह्नह्नआप इतना क्यों घबराते हैं महाशय? भगवान् पर भरोसा रखिए। वे सब ठीक कर देंगे। आपको जितने रुपयों की आवश्यकता हो, ले जाइए। यह तो सब आपका ही है।

नथुवाह्नह्नआप कितने दयालु हैं साहब! मैं किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ। इस कृपा के लिए आजन्म आभारी रहूँगा। (आँसू आ जाते हैं)

डाक्टरह्नह्नऐसा क्यों कहते हैं, मैं तो आप लोगों का ही सेवक हूँ। (पुकार कर) कलुवा, इधर आओ।

(कलुवा का आना)

कलुवाह्नह्नआ गया, हजूर।

डाक्टरह्नह्नदेखो, हमारी मेज पर एक पीली लम्बी-सी चेक-बुक रखी है, उठा लाओ। और हाँ, पास-बुक भी लेते आना।

कलुवा ह्नअभी लाया गरीब परवर! (जाता है)

डाक्टरह्नह्न(नथुवा से) आप कहाँ रहते हैं?

नथुवाह्नह्नयहाँ से एक मील दूर पुलिया मोहल्ले में।

डाक्टरह्नह्नबड़ा कष्ट हुआ होगा यहाँ तक आने में, पाँव थक गये होंगे। लाइए, दबा दूँ। (पाँवों की ओर बढ़ते हैं)

नथुवा ह्ननहीं-नहीं साहब, कुछ भी कष्ट नहीं हुआ। रहने दीजिए।

(कलुवा आ कर डाक्टर साहब को पास-बुक और चेक-बुक देता है)

डाक्टरह्नह्न(पास-बुक खोलते हुए) सेवा करना तो मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है, इसमें संकोच की क्या बात है? (पास-बुक में रुपये कम देख कर हतबुद्धि-से खड़े हो जाते हैं) (स्वगत) अब क्या होगा, मैंने तो पाँच सौ रुपये देने का वचन दिया है; पर इसमें तो कुल तीन सौ ही हैं। दो सौ का अब कैसे प्रबन्ध होगा? (सोचते हैं) ठीक, समझ गया मेरी सोने की जंजीर दस तोले से कम की नहीं है। इसे धरोहर के रूप में रख कर इतने रुपये मिल जायेंगे। (प्रकट) मेरे भाई, कल प्रातःकाल १० बजे से पहले ही पाँच सौ रुपये तुम्हारे स्थान पर पहुँचा दूँगा। चिन्ता न करना।

नथुवा ह्नमैं ही उपस्थित हो जाऊँगा, आप कष्ट न करें।

डाक्टरह्नह्नकष्ट की क्या बात है। मैं भी तो आप-जैसा ही साधारण व्यक्ति हूँ। फिर अपराध तो मेरा ही है जो किसी कारण से इस समय आपकी सेवा न कर सका।

नथुवाह्वह्वकोई बात नहीं, कल सही। अच्छा, आप विश्राम कीजिए, मैं जाता हूँ। नमस्ते।

डाक्टरह्वह्वनमस्ते! देखिए, महाशय किसी प्रकार की शंका न करना। रुपये अवश्य निश्चित समय तक पहुँचा दूँगा।

नथुवाह्वह्वडाक्टर साहब! यह आप क्या कहते हैं, कैसी शंका?

(जाता है)

डाक्टरह्वह्वमुझे इस समय बड़ा लज्जित होना पड़ा। ये महाशय कहेंगे कि वचन से फिर गया। न देने के बहाने हैं। भगवान्! आपने यह आज क्या किया?

(सोचते हुए अन्दर जाते हैं)

(पट-परिवर्तन)

।। पाँचवाँ दृश्य।।

(शिव और पार्वती का प्रवेश)

शिवह्वह्वप्रिये, उस पुरुष को देख रही हो?

पार्वतीह्वह्वकौन-से पुरुष को, नाथ?

शिवह्वह्ववही जो मकान के बरामदे में कुछ सोचता हुआ-सा टहल रहा है।

पार्वतीह्वह्वहाँ! देख तो रही हूँ। क्यों, क्या बात है?

शिवह्वह्वयह संसार का एक महापुरुष है।

पार्वतीह्वह्वआप तो इसी तरह की कल्पना किया करते हैं।

शिवह्वह्वनहीं प्रिये, यह कल्पना नहीं सत्य है। इसके द्वारा संसार का बड़ा उपकार होगा। जानती हो, यह इस समय क्या सोच रहा है?

पार्वतीह्वह्वसोच रहा होगा कोई बात, मुझे इससे क्या! पर स्वामी, यह तो डाक्टर है।

शिवह्वह्वहाँ, डाक्टर है और ऐसा डाक्टर जिसने लाखों गरीब अपाहिजों की सेवा की है, हजारों रोगियों का आशीर्वाद प्राप्त किया है।

पार्वतीह्वह्वफिर इससे बढ़ कर और क्या उपकार हो सकता है? सेवा से बढ़ कर कौन-सा उपकार होना चाहिए, मैं आपका अभिप्राय नहीं समझी।

शिवह्वह्वहाँ, यह तो उपकार है ही; पर इससे भी बढ़ कर भूले-भटकों को राह दिखाना सबसे बड़ा उपकार है। उमा! आजकल संसार में अशान्ति है, भ्रम है, अविश्वास हैह्वह्वसब तरफ दुःख का ही साम्राज्य है। पाप-मार्ग की ओर सबकी प्रवृत्ति है। श्रद्धा का चिह्न कहीं भी दिखलायी नहीं देता। मत-मतान्तर में पड़ कर लोग अपना कर्तव्य भूले जा रहे हैं।

पार्वतीह्वह्वआप ठीक कहते हैं, प्रभो! नारद ने भी मुझ से यही कहा था कि मृत्युलोक में प्राणी सन्तप्त दिखायी देते हैं। उनमें सुख की कल्पना करना स्वप्न के समान है। भिन्न-भिन्न जातियों में परस्पर विद्वेष की अग्नि प्रज्वलित है। धर्मों में संघर्ष के अंकुर अधिकता से फूट पड़े हैं। एक मनुष्य दूसरे का घातक बने बैठा है। केवल इसलिए कि वह उसका धर्म नहीं मानता। पथ एक है, पर कल्पना करोड़ों पथों की है। न जाने इन सबका उद्धार कैसे होगा? लोगों में हिंसा-वृत्ति इतनी प्रबल हो उठी है कि जिधर देखो, उधर रक्तपात! साम्राज्य-लिप्सा के बहाने न मालूम कितने-कितने निरपराधों के रक्त से होली खेली जाती है। (आँखों में आँसू भर कर) यह नर-संहार लीला, भला शान्ति का स्वप्न कैसे देख सकती है, लोकेश?

शिवह्वह्व(श्वास छोड़ कर) हाँ, देवी! मृत्युलोक में कलियुग अपना बड़ा भयंकर रूप दिखला रहा है। मुझे भी इन दीन प्राणियों पर दया आती है।

पार्वतीह्वह्वतो आप उसे दण्ड क्यों नहीं देते? एक बार अपने प्रलयंकारी नेत्र खोल कर उसे मदन की भाँति भस्म क्यों नहीं कर देते?

शिवह्वह्वनहीं! मुझे अभी अपना तीसरा नेत्र खोलने की आवश्यकता नहीं है। मैं चाहता हूँ कि बिना प्रलय के संसार में शान्ति और सुख का राज्य हो जाये और इसकी नींव रखने का श्रेय इन्हीं सन्तप्त प्राणियों में से किसी को हो। यह पुरुष भी

इनमें से एक होगा जो संसार में नव-स्फूर्ति का संचार, कानों में भक्ति और कर्म का मन्त्र फूँकेगा। तुम देखोगी कि इससे संसार को कितनी सान्त्वना मिलेगी। तुम विश्वास करो।

(स्नेह की दृष्टि से देखते हैं)

पार्वतीह्वहाँ नाथ, देखती तो आ रही हूँ। कबीर, तुलसी, सूर, रामतीर्थ, विवेकानन्द आदि जिस-जिस को आपने महापुरुष बताया, सभी की लीलाएँ देखीं, एक इन डाक्टर साहब की भी सही।

शिवह्वतो क्या तुम समझती हो, इनके द्वारा संसार का कोई भी उपकार नहीं हुआ। भोली! इन्हीं के कारण तो यह पृथ्वी टिकी हुई है, वरना कभी भी रसातल को चली जाती। ऐसे महान् पुरुष का अवतार समयानुसार ही हुआ करता है। बुद्ध ने जीवन के सत्य की खोज की। कबीर ने भेद-भाव को दूर भगाने का प्रयत्न किया। तुलसी ने राम-राम का पाठ पढ़ा कर मनुष्य के जीवन का उद्देश्य रामचरितमानस के द्वारा राजा से ले कर रंक तक को सुनाया। सूर ने अनन्योपासना का बीज बोया। रामतीर्थ और विवेकानन्द ने ज्ञान का स्पष्टीकरण किया। शंका न करो, यह महापुरुष भी इसी प्रकार कोई अपना सन्देश संसार को सुनायेगा। इसमें मेरी ही प्रेरणा है।

(भावुक हो कर मौन हो जाते हैं)

पार्वतीह्वमुझे क्षमा करो नाथ! मैं आपकी बातों पर विश्वास करती हूँ, शंका कैसी? आइए, विश्राम का समय हो गया है।

शिवह्वप्रिये! यह पुरुष सोच रहा है कि संसार क्या है? दुःख क्या है? 'मैं' किसे कहते हैं? मनुष्य मर कर कहाँ चला जाता है? उसका शरीर स्थिर क्यों नहीं? सारे पदार्थ असार क्यों हैं? ऐसे प्रश्न ही इसे वैराग्य की ओर ले जा रहे हैं। चलो, अब चलें।

(एक ओर को प्रस्थान) (पट-परिवर्तन)

(क्रमशः)

सत्य : कलियुग-सन्तारक

अब, कलियुग में संसार के लोगों ने सत्य को त्याग दिया है, इसलिए उन्हें कष्ट झेलने पड़ रहे हैं। किन्तु जो सत्य का पालन करते हैं, सत्य की साधना करते हैं, सत्य-पालन का व्रत धारण करके उसके लिए कष्ट सहन करते हैं, वह कलि को तरने की शक्ति अर्जित कर लेते हैं। सत्य के प्रकाश द्वारा अन्धकार का भयंकर प्रभाव दूर कर दिया जाता है। सत्य इस युग का महान् तप है। यह सर्वोपरि शोधक तथा उन्नायक है। यह एक ऐसी शक्ति है जो साधक के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने में प्रत्येक पग पर सहायता करती है। अतः सत्य सर्वाधिक लाभकारी है।

इसलिए विवेकशील साधक सत्य को अपना जीवन-साथी बनाते हैं। यह समस्त उच्चतर लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रवेश-द्वार है। साथ ही, यह सद्-चरित्र की भी आत्मा है। इसीलिए परम श्रद्धेय गुरुदेव ने साधकों और जिज्ञासुओं के इस आध्यात्मिक परिवार में प्रवेश पाने के लिए स्थापित किये जाने वाले तीन आधारभूत नियमों में से एक इसे भी अपरिहार्य रूप से आवश्यक बनाया। उन्होंने कहाह्व''सत्य से अलंकृत हो कर आने वाले जिज्ञासुओ! आओ, मैं तुम्हें अपने आध्यात्मिक परिवार का सदस्य बनाऊँगा।'' अतः हमें अपने आध्यात्मिक और लौकिक जीवन में सत्य के महत्त्व, उसकी आवश्यकता तथा उसकी महानता का चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि यदि आपके ऐहिक जीवन को एक आदर्श जीवन होना है और इसे आपके आध्यात्मिक जीवन का समर्थक बनना है, तब इसे निश्चित रूप से सत्य को अपना कर इसके साथ सामंजस्य बैठा लेना चाहिए।

सत्य और नैतिकता आध्यात्मिकता की आधार-शिलाएँ हैं। दिव्यानुभूति और पूर्णता की अवस्था अच्छे जीवन के बीज से अंकुरित होती है और व्यक्ति के आदर्शपूर्ण सदाचरण और नीति-सम्पन्न जीवन से यह प्रकट होती है। इसका अर्थ विवेकहीन, असंगत अथवा काल्पनिक अति-नैतिकवाद से नहीं है। इसका अर्थ एक स्वस्थ और विवेकपूर्ण नीति-सम्पन्न आदर्शवाद से है, एक ऐसी भलाई से है जो शुभता, सुन्दरता और पवित्रता के प्रति सम्मान-जनक भावना से उत्पन्न होती है; भलाई से, आचरण और चरित्र की साधुता से, व्यवहार की उदात्तता से उत्पन्न होती है; और जीवन के प्रति व्यवहार की भद्रता (जो सच्चे संस्कारों, सच्ची शिक्षा और सच्ची समझ से आती है) से उत्पन्न होती है।

स्वामी चिदानन्द

बाल-स्तम्भ :

मोटी आंटी ८

स्वामी रामराज्यम्

(बच्चो, इस धारावाहिक कहानी में तुम पढ़ रहे हो मोटी आंटी के जीवन से जुड़े हुए कुछ प्रेरक प्रसंग। प्रत्येक प्रसंग एक मोती की तरह है, जो मन की पिटारी में सँभाल कर रखने योग्य है। इन मोतियों का धन तुम्हारी जीवन-यात्रा में बहुत काम आयेगा।)

८. 'वृद्धदेवो भव'

एक दिन डा. अरुण मोटी आंटी के घर अचानक ही आ गये। उनके पैर छू कर बोलेह्वह्व''आंटी, आशीर्वाद माँगने आया हूँ। मैं एक नर्सिंग होम[१] खोलने जा रहा हूँ।''

मोटी आंटी बोलींह्वह्व''लेकिन तुम्हारा नर्सिंग होम दूसरे नर्सिंग होमों से बिलकुल अलग होना चाहिए। मैं तो तभी आशीर्वाद दूँगी, जब तुम मेरी कुछ बातें मानोगे।''

''आंटी, कहो।''

मोटी आंटी कहने लगींह्वह्व''गरीब मरीजों से पैसा नहीं लेना। उन्हें अपने नर्सिंग होम से बिना उनका पूरा इलाज किये वापस नहीं जाने देना। दूसरी बात, अपने परिवार वालों से तिरस्कृत बूढ़े मरीजों के लिए एक अलग वार्ड में कुछ बेड डलवा देना। उसी वार्ड में वे रहेंगे। जब तक उनकी इच्छा होगी, तब तक रहेंगे; सम्मानित बुजर्गों की तरह रहेंगे। बोलो, राजी हो?''

''हाँ आंटी राजी हूँ''ह्वह्वडा. अरुण ने कहाह्वह्व''लेकिन उन बूढ़ों को देखने के लिए तुम्हें बीच-बीच में नर्सिंग होम आना पड़ेगा।''

''हाँ, आऊँगी। तुम नहीं बुलाओगे, तब भी आऊँगीह्वह्व'' मोटी आंटी खुश हो कर बोलीं।

महीने-डेढ़ महीने बाद मोटी आंटी मुझे, गुल और पूनम को ले कर डा. अरुण का नर्सिंग होम देखने के लिए गयीं। डा. अरुण मिले। उन्होंने कहाह्वह्व''आपके आदेशों का पालन करने की कोशिश की है। आप चल कर देख लें। जो कमी हो, वह बतायें।'' सचमुच, डा. अरुण ने वृद्ध रोगियों के लिए बहुत अच्छी व्यवस्था कर दी थी। उन्होंने उनके लिए एक अलग वार्ड में पाँच बेड डलवा दिये थे। बेडों पर नये गद्दे, कम्बल और रजाइयाँ पड़ी हुई थीं। एक टी.वी. सेट रखा हुआ था। एक आलमारी में कुछ किताबें उनके पढ़ने के लिए रख दी गयी थीं। एक टेलीफोन भी रखा हुआ था जिससे डा. अरुण के चैम्बर[२] में रखे टेलीफोन पर सीधे बातचीत हो सकती थी। यह सब देख कर मोटी आंटी बहुत प्रसन्न हुईं। फिर डा. अरुण से बोलींह्वह्व''मैं नीचे रिसेप्शन[३] में कागज में लिपटा हुआ एक पत्थर छोड़ कर आयी हूँ। उसे मँगवा लो।''

डा. अरुण स्वयं जा कर वह पत्थर ले आये। हम सब बच्चे बहुत उत्सुकता से देख रहे थे कि वह क्या चीज होगी। मोटी आंटी ने पत्थर पर लिपटा हुआ कागज हटाया। वह संगमरमर का एक टुकड़ा था। उस पर लिखा हुआ थाह्वह्व''वृद्धदेवो भव''[४]। मोटी आंटी ने डा. अरुण से कहाह्वह्व''इस पत्थर को इस वार्ड के मुख्य द्वार पर लगवा देना।''

[१]गैरह्वसरकारी अस्पताल, [२]वह कमरा जहाँ डाक्टर बैठते हैं और मरीजों को देखते हैं, [३]स्वागत कक्ष, [४](हमारे लिए) वृद्धजन भगवान् हों।

अगले सप्ताह मोटी आंटी एक 'ओल्ड एज होम'[५] से अस्सी साल के एक बूढ़े व्यक्ति को अपने साथ लिवा लायीं। वार्ड में प्रवेश करने से पहले गुल ने उसकी आरती उतारी। मैंने उसे माला पहनायी। पूनम को मोटी आंटी ने गोद में उठाया। उसने उस वृद्ध के मुँह में मिठाई का एक टुकड़ा डाला। शायद इतने सम्मान की आशा उस वृद्ध को नहीं थी। प्रसन्नता से वह रोने लगा। रोते-रोते ही उसने वार्ड में प्रवेश किया। अपने बेड पर बैठने के बाद उसने मोटी आंटी से कहाह्लह्ल''बेटी, मेरी रामकहानी सुनोगी? मैं तुम्हारा ज्यादा समय नहीं लूँगा।''

मोटी आंटी, पूनम, गुल और मैं उसकी रामकहानी सुनने के लिए सामने पड़े हुए बेड पर बैठ गये। वह सुनाने लगाह्लह्ल

''मेरा एक बेटा है, एक ही बेटा है। इतनी सामर्थ्य तो नहीं थी, लेकिन अपना पेट काट कर किसी प्रकार उसे पढ़ा-लिखा कर इंजीनियर बना दिया। फिर उसका विवाह कर दिया। उसके दो बेटे हुए जो अब बड़े हो गये हैं। एक अमरीका में पढ़ता है और दूसरा कनाडा में। मेरा बेटा वेतन में मोटी रकम पाता है, लेकिन बेटी...।'' इतना कह कर वह रोने लगा, फिर अपने आँसू पोंछ कर बोलाह्लह्ल''इज्जत-प्यार देने की कौन कहे, मुझे दो जून की रोटी देने के लिए भी वह राजी नहीं है। एक दिन मुझसे बिना पूछे मुझे 'ओल्ड एज होम' में छोड़ आया, जहाँ से तुम मुझे लिवा लायी हो। बेटा इसी शहर में रहता है, लेकिन मेरे पास आने के लिए उसके पास समय नहीं है। मेरी आँखें तरसती हैं उसे देखने के लिए, पोतों को देखने के लिए। बताओ बेटी, मेरे जैसा कोई अभागा होगा क्या?''

मोटी आंटी की आँखों से आँसू गिरने लगे। रोते-रोते बोलींह्लह्ल''बापू, अभागे तुम नहीं, तुम्हारा बेटा है।'' फिर हम तीनों की तरफ देखते हुए बोलींह्लह्ल''कुछ समझे? माता-पिता इस धरती पर चलते-फिरते भगवान् होते हैं। इन भगवानों की सेवा-पूजा करने से कभी मत चूकना।'' **(क्रमशः)**

आध्यात्मिक जीवन के पूर्वापेक्ष्य

जीवन की शुद्धता ईश्वर-साक्षात्कार के लिए आवश्यक शर्त है।

शुद्धता तथा नम्रता के बिना जरा भी आध्यात्मिक उन्नति सम्भव नहीं है।

नम्रता तथा आत्म-संयम आध्यात्मिक उन्नति के लिए बहुत ही आवश्यक हैं। आत्म-संयम ही आध्यात्मिकता का आधार है।

जो काम तथा क्रोध के आवेग को सहने में समर्थ है, वह आत्मानन्द का साक्षात्कार कर लेगा।

अनुशासन, वैराग्य, विवेक, शम, श्रद्धा, तितिक्षा, मुमुक्षुत्व, एकाग्रता, ध्यानह्लह्लये आत्म-साक्षात्कार के लिए सीढ़ियाँ हैं।

सहनशीलता, संयम, आर्जव, सत्य, शुद्धता, आत्म-संयम, तपस्या, दान, संन्यासह्लह्लये आत्म-साक्षात्कार के मुख्य सहायक हैं।

अच्छे कुल में जन्म लेना कोई महत्त्व नहीं रखता। आध्यात्मिक मार्ग में हृदय की कुलीनता चाहिए।

जो व्यक्ति दूसरों से प्रेम नहीं करता, वह आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति नहीं कर सकता।

स्वामी शिवानन्द

[५]वह स्थान जहाँ बूढ़े लोग रहते हैं और जहाँ उनकी देख-भाल की जाती है।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी के सभी अनुयायियों के लिए परमाध्यक्ष स्वामी जी महाराज का पत्र

अविनाशी परमात्मा की सौभाग्यशाली सन्तान!

ॐ नमो नारायणाय!

परम पूज्य सद्गुरुदेव के महामहिमामयी १२५ वें जयन्ती-वर्ष के शुभ अवसर पर मैं भारतवर्ष तथा विश्व-भर में फैले हुए उनके सभी प्रिय बच्चों के लिए, उनके आशीर्वाद हेतु प्रार्थना करता हूँ। हम जहाँ कहीं भी हों, जैसी भी परिस्थिति में हों, उनके हैं, उनके परिवार के हैं। हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमने अपनी जीवन-नौका का आधार एवं आश्रय उनके चरण-कमलों में बनाया है!

सद्गुरुदेव ने हमें पथ-दर्शाया तथा इस बात को बारम्बार समझाया कि जीवन का वास्तविक लक्ष्य ईश्वर-साक्षात्कार करना है और हमारा प्रत्येक कार्य ईश्वरोन्मुखी होना चाहिए। उन्होंने हमें अपने प्रत्येक कार्य को प्रभु की पूजा के रूप में समर्पण कर देने की तथा इस प्रकार अपने जीवन के प्रत्येक पल को उन्हीं के स्मरण में व्यतीत करने की प्रेरणा दी। ''इन सभी नाम-रूपों में हम आपका ही दर्शन करें....'' इस प्रकार गुरुदेव ने हम सभी को भगवान् के, एक ठोस वास्तविकता के रूप में दर्शन करवा दिये हैं। भगवान् केवल सर्वातीत सत्ता ही नहीं, अपितु प्राणी मात्र के अन्तर्बाह्य स्थित सर्वान्तर्यामी एवं प्रत्येक वस्तु-पदार्थ में, प्रत्येक विचार एवं कार्य में विद्यमान सर्वव्यापक सत्ता भी हैं। वह अन्य किसी भी वस्तु की अपेक्षा हमारे निकटतर हैं, इस सहज सत्य को हम सदा स्मरण रखें तथा इसमें प्रविष्ट हो जायें। यह हमारी अपने गुरु को एक सच्चे शिष्य की ओर से समर्पित की जाने वाली सर्वश्रेष्ठ 'गुरुदक्षिणा' होगी। प्रत्येक व्यक्ति को अपने हृदय में इस सत्य को आत्मसात् करना होगा, इस साधना के द्वारा अपना जीवन रूपान्तरित करना होगा। इसके सहायतार्थ जप, संकीर्तन, सेवा, भजन, स्वाध्याय, श्रवण, मनन, ध्यान, सत्संग इत्यादि में से कोई भी अथवा सभी को उपयोग में लायें और इसे उदात्त जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधन के रूप में अपना लें।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की शिक्षाएँ पाठकों एवं श्रोताओं के हृदय में सीधे उतर जाती हैं। वह अत्यन्त सरल एवं सुबोध हैं। चौथी कक्षा का विद्यार्थी भी उन्हें समझ सकता है। वह अभ्यास में लाने योग्य तथा सीधी एवं संक्षिप्त हैं। उनकी शिक्षाएँ सदैव एकता पर बल देती हैं तथा उन्होंने सदा लोगों, धर्मों, जातियों तथा देशों की एकता पर बल दिया है। अपना यह सन्देश उन्होंने असंख्य लोगों को दिया। उन्होंने अपने मिशन को 'दिव्य जीवन' नाम दिया। दिव्य जीवन का अर्थ दिव्यता में जीवन जीना है। सादगी, शुद्धता, भक्ति तथा त्याग का जीवन ही दिव्य जीवन है।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं को अब यह अद्भुत स्वर्णिम सुअवसर प्राप्त हुआ है कि वे अपनी शाखाओं के दरवाजे अत्यन्त उत्साहपूर्वक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, धर्मार्थ एवं सामाजिक कार्यक्रमों के लिए खोल दें और इस रूप में परम पूज्य गुरुदेव को सामूहिक श्रद्धांजलि समर्पित करें। इस बात की याद हमेशा बनाये रखें कि दिव्य जीवन संघ का आश्रम अथवा शाखाएँ किसी की व्यक्तिगत नहीं हैं, वे सब गुरुदेव के हैं। हम उनके केवल सेवक हैं, जिन्हें उनके परिसरों की देख-रेख करनी है, जिससे कि उन स्थानों के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसारण, निर्धनों एवं रोगियों की सेवा, क्षुधितों एवं वस्त्रहीनों के लिए भोजन-वस्त्र की व्यवस्था की जा सके। यह हमारा महान् सौभाग्य है कि उन्होंने हमें अपने हाथों का उपकरण चुना है।

उन बच्चों पर दृष्टि डालें, जो असहनीय पारिवारिक क्लेशों, आधुनिक विचार-धाराओं, इच्छाओं और आशाओं तले कुचले जा रहे हैं, और उनका कष्ट अपने हृदय में अनुभव करें। आज की युवा पीढ़ी को देखें, जो भौतिकवाद के दानव की भयंकर शक्ति के प्रलोभनों में जकड़ी हुई है; उनकी यन्त्रणा को महसूस करें! वृद्ध माता-पिता की ओर देखें, जो सांसारिक सुख-सुविधाओं में रहते हुए भी एकाकीपन के अकथनीय कष्ट झेल रहे हैं, उनके मूक-क्रन्दन को सुनें और उनकी मनोव्यथा को समझें। हमारे वैज्ञानिक और बौद्धिक विकास के हाथों द्रुत गति से हो रहे मानव-जीवन, प्रकृति और जीवन-मूल्यों के विनाश की ओर देखें, समझें और अपने हृदय से रक्ताश्रु बहने दें! अपने भाइयों के लिए इस कष्ट को अनुभव करें। यह तप हमारी चित्त-शुद्धि करेगा तथा हमें 'पूर्णता के मार्ग' पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा।

सद्गुरुदेव ने आधुनिक मानव को अपने अन्तरतम के दिव्य केन्द्र में स्थित 'आनन्द के अक्षय स्रोत' की ओर उन्मुख होने का आह्वान किया तथा उपदेश दिया :

'मुख में राम, हाथ में काम' अर्थात् अपना हृदय भगवान् की ओर लगाये रखें और सेवा-कार्य करते रहें। निर्धनों एवं रोगियों की सेवा करें। प्राणी मात्र में भगवान् को देखें। 'वही' कण-कण में विद्यमान हैं।

सद्गुरुदेव ने अपनी समस्त शिक्षाओं का सार छह सरल शब्दों में संग्रहीत कर दिया। वह हैंह्नह्नसेवा, भक्ति, दान, पवित्रता, ध्यान और साक्षात्कार।

हाँ, परम पिता परमात्मा के प्रिय बालको! हम सभी के लिए अब यह समय है कि हम एक हाथ में सद्गुरुदेव के ज्ञान की मशाल और दूसरे हाथ में सेवा की छड़ी लिये हुए उठ खड़े हों और अपने जीवन पर विजय पाने के लिए निर्भीकता से जीवन-पथ पर अग्रसर हो जायें। आप सभी के ऊपर गुरुदेव की अपार कृपा-वृष्टि हो!

विजय आपकी है! जय गुरुदेव! जय शिवानन्द!

Swami Vimalananda

(स्वामी विमलानन्द)

प्रेसिडेन्ट

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

सद्गुरुदेव के अनन्त आशीर्वादों से तथा श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अपार-कृपा से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित अपने ही एक अंग, 'शिवानन्द होम' के माध्यम से विनम्र सेवा में सतत संलग्न है। इसमें उन आवास-हीन निर्धन लोगों को चिकित्सीय सुविधा एवं देख-रेख उपलब्ध करवायी जाती है, जिन्हें रोग-ग्रस्त होने पर भरती किये जाने की आवश्यकता पड़ती है।

इस माह कई नये रोगी भरती किये गये, जिनमें कुछ ऐसे थे जिनके हाथ-पैरों में घाव थे तथा उन घावों में कीड़े पड़ चुके थे और संक्रमित हो चुके थे। ये ऐसा दीर्घकालीन कष्टसाध्य रोग बन गया था जिसमें प्रभावित अंग को पूर्ण आराम आवश्यक हो जाता है। और इन सड़क पर रहने वालों के लिए, जिन्हें भोजन-पानी के लिए स्वयं जाना पड़ता है, उनके लिए औषधि लाने की अथवा मरहम-पट्टी की व्यवस्था कौन करे? सताये जाने पर, जिन्हें पिटाई हो जाने के भय से अपनी गिनी-चुनी वस्तुएँ उठा कर भागना पड़ता है; भोजन के लिए कतारों में लगना पड़ता है, सड़क के कुत्तों अथवा अन्य कष्टदायी जानवरों से अपनी रक्षा के लिए जिन्हें रात को आराम की नींद सो सकना भी एक सपना ही है, उनके लिए रोग-ग्रस्त अंग को पूर्ण आराम दे पाना लगभग असम्भव ही होता है। अतः ये रोगी, जो भरती किये गये थे, चिकित्सकीय सुविधा, मरहम-पट्टी, सही औषधि एवं उचित देख-रेख उपलब्ध हो जाने से स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

एक दीर्घकालीन दमे के रोगी की संकटकालीन परिस्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण तुरन्त रात को ही स्थानीय अस्पताल में उस समय ले जाना पड़ा, जब उसने अचानक सीने में दर्द तथा कष्टपूर्ण श्वास की शिकायत की। कुछ दिन तक उसे आई सी यू (गहन देख-रेख कक्ष) में रखा गया और स्थिति में कुछ सुधार आ जाने पर पुनः 'होम' में लाया गया। श्वास-प्रणाली एवं दमे के पुराने रोगों का यदि आजीवन नहीं, तो दीर्घकालीन इलाज तो करना ही पड़ता है तथा इसका समय-समय पर निरीक्षण करके औषधि-निर्धारण करना होता है, बीच-बीच में आक्सीजन देने की तथा 'अन्तःशिरा औषधियाँ' देने की भी आवश्यकता रहती है। गुरुदेव की कृपा से उसकी दशा में सुधार हो रहा है।

अन्य दो रोगी मानसिक रोग ग्रसित पाये गये तथा तदनुसार मनोचिकित्सक द्वारा उनकी चिकित्सा प्रारम्भ हो गयी। एक युवती रोगिणी जो मन्द बौद्धिकता तथा मानसिक रोग से ग्रस्त थी तथा साथ ही मिरगी के दौरे भी पड़ते थे, का अनेकों परीक्षणों के उपरान्त चिकित्सक के परामर्श अनुसार इलाज प्रारम्भ किया गया। अन्य कई मानसिक रोगियों की भाँति उसके भी सारे शरीर पर बुरी तरह से जलाये जाने के चिह्न थे जैसे कि उसे आग के बहुत अधिक निकट रखा गया हो, या लगभग आग में झोंक ही दिया गया हो। वह स्वयं इस सम्बन्ध में कुछ भी बता पाने में असमर्थ है, क्योंकि उसकी वाणी अवरुद्ध और भाषा अत्यन्त सीमित थी। किन्तु क्या अभी भी ऐसे लोग हैं जो समझते हैं कि आग में झोंक देने से मानसिक रोग ठीक हो जायेगा? आश्चर्य है! किन्तु इतना तो निश्चित है कि उसे मानसिक रूप से अत्यधिक आघात पहुँचाया गया है। केवल उस परम पिता की कृपा ही उसे मानसिक कष्टों से मुक्त करके शान्ति प्रदान कर सकती है। जो प्रभु उसे अपनी छत्रछाया में ले आये हैं वही उसको और हम सब, जो उन्हीं की सन्तान हैं, को अपने आलिंगन में ले कर रक्षा करेंगे। हम सब 'उनके रोगियों' को यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि हम सब हर क्षण केवल 'उन्हीं' की सुरक्षा में हैं। सभी शोकातुरों को वे धैर्य बँधायें! धीरज प्रदान करें! सुख और सहनशीलता दें उन सबको, जो पीड़ा-ग्रस्त हैं! और उनके आशीर्वाद हर एक प्राणी पर हों! हे रक्षक प्रभु, केवल आप ही हमारे सुरक्षक हैं!

ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः!

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' *स्वामी शिवानन्द*

मुख्यालय आश्रम में श्री आदि शंकराचार्य जयन्ती

''शंकराचार्य की शिक्षाएँ शब्द मात्र नहीं हैं, वे जीवन और जीवन का प्रकाश हैं। आप सब उनकी शिक्षाओं को ग्रहण करें, उनका अनुसरण करें तथा इसी जीवन में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें।''

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

श्री आदि शंकराचार्य की पावन जयन्ती मुख्यालय आश्रम में २६ अप्रैल २०१२ को अत्यन्त भक्तिभाव एवं परम पवित्रता पूर्वक मनायी गयी। सारा कार्यक्रम अति सुन्दर रूप में सुसज्जित श्री विश्वनाथ मन्दिर परिसर में स्थित आचार्यश्री के संगमरमर के विग्रह के सम्मुख सम्पन्न किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः ९ बजे जयगणेश प्रार्थना, भजन एवं कीर्तन से हुआ। श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज, श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज, श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज तथा श्री हरिहरसिंह जी ने श्रीशंकराचार्य जी के प्रेरणाप्रद जीवन एवं उदात्त दर्शन पर प्रवचन दिये। इसके बाद अष्टोत्तरशतनामावली सहित जगद्गुरु की पुष्पार्चना की गयी। आरती एवं पावन प्रसाद वितरण सहित ११.३० बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सायंकालीन सत्संग में दैनिक प्रार्थनाओं एवं स्तोत्र-पाठ के साथ-साथ श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज (मलेशिया) ने भजन तथा श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज ने प्रवचन के द्वारा आदिगुरु के श्रीचरणों में श्रद्धासुमन समर्पित किये। इस पावन दिवस पर दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

शंकराचार्य भगवान् तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद हम पर हों कि हम इसी जन्म में दिव्य चेतना से साक्षात्कार करने के लिए कटिबद्ध हो सकें!

मुख्यालय आश्रम में 'मासूम दुनियाँ, नई दिल्ली' के बच्चों का आगमन

'मासूम दुनियाँ', 'इन्नोसेंट वर्ल्ड चैरिटेबल सोसायटी' के तत्त्वावधान में चलने वाला एक विकलांग केन्द्र है जो मानसिक एवं शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को समाज के अभिन्न अंग बनने के योग्य बनाने हेतु उनके स्वास्थ्य-सुधार एवं विकास के लिए प्रयत्न-रत है।

'मासूम दुनियाँ' के अठारह बच्चे १२ अप्रैल २०१२ को अपने अध्यापकों सहित मुख्यालय आश्रम आये। आश्रम में अपने तीन दिवसीय आवास-काल में इन बच्चों ने समाधि मन्दिर, श्री विश्वनाथ मन्दिर, ऑडियो-वीडियो लाइब्रेरी (श्रवण-दर्शनालय), आश्रम के अन्नपूर्णा-अन्नक्षेत्र इत्यादि सभी स्थानों के दर्शन किये तथा वे आश्रम की विविध गतिविधियों में उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। वे मुख्यालय आश्रम के महासचिव श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा अन्य वरिष्ठ स्वामीजीओं के दर्शन-आशीर्वाद प्राप्त करने भी गये। उनके चेहरों की प्रसन्नता, गुरुदेव के पावन आश्रम में उनके आने के सौभाग्य के आनन्द को अभिव्यक्त कर रही थी।

सर्वशक्तिमान् प्रभु एवं सद्गुरुदेव की अपार कृपा-वृष्टि इन सभी पर हो!

'नेशनल इन्स्टीच्यूट ऑफ़ टेक्नौलोजी, राउरकेला, ओडिशा' के 'बी.टैक.' के विद्यार्थियों के लिए 'श्री स्वामी शिवानन्द स्मृति छात्र-वृत्ति स्थाई निधि'

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के दिव्य जीवन मिशन के अन्तर्गत निर्धन एवं सुयोग्य विद्यार्थियों की सहायतार्थ छात्र-वृत्ति प्रदान करना, प्रमुख उद्देश्यों में से एक था। इस उदात्त लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा ओडिशा के राउरकेला स्थान स्थित नेशनल इन्स्टीच्यूट ऑफ़ टेक्नौलोजी (निट) के विद्यार्थियों के लिए

गुरुदेव के पावन नाम में छात्र-वृत्ति स्थाई निधि प्रारम्भ की गयी है।

यह छात्र-वृत्ति मूल धनराशि दे कर तैयार की गयी है, जिसके ब्याज से विद्यार्थी हर वर्ष छात्र-वृत्ति प्राप्त किया करेंगे। इससे सम्बन्धित ज्ञापिका (एम. ओ. यू.) पर, इस वर्षह्वमार्च २०१२ से प्रारम्भ हो जाने के लिए, 'निट' के अधिकारियों तथा डी. एल. एस. मुख्यालय द्वारा हस्ताक्षर कर दिये गये हैं। इसके द्वारा 'निट' के बी.टैक. के प्रत्येक वर्ष के एक-एक विद्यार्थी को, अर्थात् कुल चार विद्यार्थियों को प्रति वर्ष रु. २०००/- मासिक छात्र-वृत्ति दी जायेगी।

श्री गुरुपूर्णिमा, साधना-सप्ताह तथा गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि-आराधना

पावन गुरुपूर्णिमा महोत्सव द डिवाइन लाइफ सोसायटी के मुख्यालय 'शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर' में **३ जुलाई २०१२** को आयोजित किया जायेगा। गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का **४९ वाँ** पावन पुण्यतिथि आराधना महोत्सव **१२ जुलाई २०१२** को आयोजित किया जायेगा।

उक्त दो पावन महोत्सवों के बीच की अवधि में 'साधना-सप्ताह' नामक एक आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। **४ से १० जुलाई** तक लगातार सात दिनों तक चलने वाले इस सम्मेलन में प्रतिदिन कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

उपर्युक्त कार्यक्रमों में भाग लेने के इच्छुक भक्तों से निवेदन है कि वे अपने साथ आने वाले व्यक्तियों की संख्या आदि से सम्बन्धित पूर्ण विवरण से हमें पत्र द्वारा सूचित कर दें। यह विवरण हमें **१० जून २०१२** से पूर्व प्राप्त हो जाना चाहिए।

शारीरिक दृष्टि से निर्बल अथवा गम्भीर रोग से प्रभावित व्यक्तियों को इस कठिन कार्यक्रम के कारण होने वाले परिश्रम तथा थकान की परिस्थितियों से बचने के विषय में विचार कर लेना चाहिए। वे किसी अन्य अवसर पर आश्रम में आ सकते हैं। क्योंकि श्रावण मास होने के कारण रोज आने-जाने वाले यात्रियों की भारी भीड़ भी, इन दिनों में आने-जाने में अत्यन्त कठिनाई उत्पन्न कर देती है।

यह कार्यक्रम वर्षा-ऋतु में होगा। उन दिनों इस क्षेत्र में घनघोर वृष्टि की सम्भावना रहती है। इस प्रकार जो भक्त जन इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए आ रहे हैं, उन्हें ऋतु के अनुकूल आवश्यक सामानह्वजैसे छाता, टार्च तथा ऐसी ही अन्य वस्तुओंह्वके साथ आना चाहिए।

महोत्सव के अवसर पर आश्रम में आवासीय स्थान की कमी पड़ जाने के कारण हमें निकट के आश्रमों में स्थान प्राप्त करना होता है। आशा है, अतिथि गण इन कठिनाइयों को सहन करते हुए इस व्यवस्था के साथ प्रेमपूर्वक समझौता (adjust) करेंगे। भक्त साधकों से विनम्र प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम से एक या दो दिन पहले ही आयें तथा कार्यक्रम की समाप्ति के बाद भी एक या दो दिन से अधिक ठहरने का समय न बढ़ायें।

हम सबको गुरुदेव की कृपा प्राप्त हो !

शिवानन्दनगर, उत्तराखण्ड
१५ मई २०१२

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

अकादमी का विज्ञापन

सदस्यता शुल्क

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अम्बाला (हरियाणा): शाखा द्वारा रविवार को साप्ताहिक सत्संग, दूसरे शनिवार को वीडियो-सत्संग तथा मंगलवार को मन्त्र-जप नियमित रूप से हुए। २५ मार्च को सत्संग भवन का १३ वाँ वर्ष भव्य रूप से मनाया गया। स्थानीय सत्संग मण्डली ने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया। श्री रामनवमी की सन्ध्या को विशेष सत्संग हुआ। होमियोपैथी की निःशुल्क सेवा तथा जल-सेवा चलती रही।

आस्का, गंजाम (ओडिशा): मार्च में रविवार एवं गुरुवार को सत्संग नियमित रूप से; २५ को 'साधना दिवस' में भारी संख्या में साधक सम्मिलित हुए; श्री जय चन्द्र नायक के निर्देशन में निकटवर्ती क्षेत्रों की दश दिव्य जीवन संघ शाखाओं ने मिल कर (दिव्य क्षेत्र) डिवाइन डिस्ट्रिक्ट बनायी।

बरबिल्, मतकमबेडा (ओडिशा): फरवरी मास में शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार को कुल पाँच साप्ताहिक सत्संग तथा चार सोमवारों को आवासीय सत्संग हुए। 'शिवानन्द होमियो धर्मार्थ औषधालय' द्वारा कुल ६३५ रोगियों की चिकित्सा की गयी। प्रत्येक रविवार 'बाल विहार' तथा २४ को 'साधना दिवस' चलता रहा। उत्तरी ओडिशा दिव्य जीवन संघ शाखाओं की २६ को होने वाली गोष्ठी में फरवरी २०१३ को तीन दिवसीय शिविर बरबिल् शाखा में होना निश्चित किया गया।

बारीपदा (ओडिशा): नियमित गतिविधियों के साथ-साथ शाखा द्वारा २ जनवरी को वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमें विशेष सत्संग, पादुका-पूजा तथा भगवद्गीता पर प्रवचन, भक्तों के आवास स्थान में हुए। ३ और ४ फरवरी को श्री स्वामी जितमोहानन्द जी महाराज द्वारा श्री राम मन्दिर प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में राजलोका. मयूरभंज में भारी संख्या में उपस्थित भक्तों को सम्बोधित किया गया। आदिवासियों को 'दिव्य जीवन' की ओर प्रेरित करने के उद्देश्य से किये जाने वाले कार्यक्रमों के अन्तर्गत ६ और ७ फरवरी को आदिवासियों के सुदूर स्थित गाँव नौपारा, ठाकुरमुंडा में किये जाने वाले अखण्ड नाम संकीर्तन एवं यज्ञ में शाखा सदस्यों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक भाग लिया। महाशिवरात्रि को 'ॐ नमः शिवाय' के अखण्ड जप सहित रात्रि-जागरण तथा पादुका-पूजा की गयी। शाखा द्वारा 'हरे कृष्ण उत्सव' के महामन्त्र संकीर्तन में २६ से २८ फरवरी तक सम्मिलित हो कर नगर-संकीर्तन किया गया।

भुवनेश्वर (ओडिशा): फरवरी-मार्च में शाखा द्वारा दैनिक पूजा एवं गुरुवार सत्संगों के अतिरिक्त २४ घण्टे का अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन, हरि-कथा, भागवत पारायण; पंचाक्षरी मन्त्र के १२ घण्टे के अखण्ड जप सहित महाशिवरात्रि उत्सव, २४ को चिदानन्द दिवस पर राम नाम जप, हरि-कथा एवं भागवत पारायण; २६ को साधना दिवस; मार्च में श्री राम चरित मानस पारायण में स्वाध्याय एवं प्रवचन ५ से १४ तक; २४ को चिदानन्द दिवस तथा २५ को साधना दिवस मनाये गये। भक्तों के निवास पर ६ चल सत्संग भी किये गये।

भवानीपटना, कालाहांडी (ओडिशा): १५ मार्च को शाखा द्वारा, जिला स्वास्थ्य पदाधिकारियों के सहयोग से चिदानन्द निदम, जुगसाई पटना में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया जिसमें सी.डी.एम.ओ. ने विशेषज्ञ चिकित्सकों का समूह, औषधियाँ तथा अन्य सहायक सामग्री उपलब्ध करवा कर सहायता की। बच्चों सहित कुल २३४ रोगियों का निरीक्षण करके औषधियाँ दी गयीं, ए.डी.एम.ओ. डा. अशोक कुमार ने शिविर का निरीक्षण किया। शाखा के स्वयंसेवक पूरा समय सहयोग देते रहे।

छतरपुर, गंजाम (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजाएँ एवं २४ को शिवानन्द एवं चिदानन्द दिवस तथा छह विशेष सत्संग, फरवरी मास में; २० को पावन महाशिवरात्रि पर प्रातः सुन्दरकाण्ड पाठ, सायंकाल विशेष सत्संग रात्रि जागरण तथा महामृत्युंजय मन्त्र जप किया गया।

फरीदपुर, बरेली (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा 'श्री राम चरित मानस' पाठ सहित साप्ताहिक सत्संग, ध्यान तथा गुरुग्रन्थ साधना का पाठ; ७ मार्च को होली उत्सव, निर्धनों के प्रति सेवा तथा कुष्ठ बस्ती के निकटवर्ती मन्दिर के जीर्णोद्धार में सेवा दी गयी।

घारी, इम्फाल (मणिपुर): २९ जनवरी तथा २५ मार्च को शाखा द्वारा स्वाध्याय, भजन एवं कीर्तन सहित विशेष सत्संग किये गये।

घटपदमुर, जगदलपुर (छत्तीसगढ़): फरवरी-मार्च में शाखा की नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। २० फरवरी महाशिवरात्रि को पंचाक्षरी मन्त्र का २४ घण्टे का अखण्ड कीर्तन, चार प्रहर की पूजा, आरती, हवन तथा भण्डारा किया गया। ८ मार्च को 'होलिका दहन उत्सव' में भजन-कीर्तन एवं नगर-संकीर्तन हुआ। २३ मार्च से १ अप्रैल तक चैत्र नवरात्र में 'श्री राम चरित मानस' पारायण, पूजाएँ, दुर्गासप्तशती पाठ तथा अन्तिम दिन अखण्ड राम नाम सहित हवन एवं कन्या पूजन किया गया।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा की नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। विशेष कार्यक्रमह्वह्वमाघ स्नान पूर्णिमा को 'इन्दिरावती-गोदावरी संगम लिंगमराज महादेव मन्दिर' में ७ फरवरी को १२ घण्टे पंचाक्षरी मन्त्र का अखण्ड जप तथा १२ घण्टे का कीर्तन, हवन एवं भण्डारा इत्यादि; महाशिवरात्रि को ६ से २१ तक पंचाक्षरी मन्त्र का अखण्ड जप, अन्तिम दिन प्रभातफेरी, हवन तथा भण्डारा; शिवरात्रि को चार प्रहर की पूजा में अभिषेक, अर्चना एवं आरती; मार्च मास में 'होलिका दहन' ८ को भजन-कीर्तन के साथ; २३ मार्च से १ अप्रैल तक चैत्र नवरात्रि में 'श्री राम चरित मानस' पारायण, 'दुर्गा सप्तशती' पाठ तथा श्री राम नाम का अखण्ड जप इत्यादि कार्यक्रम हुए।

जयपुर, कोरापुट (ओडिशा): जनवरी-फरवरी मास में दो बार दैनिक पूजा, रविवार एवं गुरुवार को सत्संग चलते रहे। इसके अतिरिक्त २० विशेष सत्संग हुए। शिवानन्द दिवस साधना दिवस के रूप में ७० भक्त साधकों सहित विविध कार्यक्रमों द्वारा प्रातः ५ बजे से ३ बजे अपराह्न तक मनाया गया। १५ जनवरी मकर-संक्रान्ति को प्रातः ६ बजे से १२ घण्टे का 'ॐ नमो नारायणाय' का अखण्ड जप तथा रात्रि सत्संग; महाशिवरात्रि में ७० भक्तों तथा महाविद्यालय के २० छात्रों ने भाग लिया तथा भगवान् शंकर की विधिवत् पूजा-अर्चना की गयी।

खाटीगुडा, नवरंगपुर (ओडिशा): मार्च माह में नियमित दो बार दैनिक पूजा तथा गुरुवार को २ घण्टे का साप्ताहिक सत्संग, ३ और १८ को एकादशी सत्संग, ९, १० तथा १२ को चल सत्संग; १८ को साधना दिवस पर १२ घण्टे का अखण्ड महामन्त्र कीर्तन तथा नारायण सेवा; श्री रामनवमी को पूजाएँ एवं सत्संग किये गये।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): मार्च मास में शाखा द्वारा प्रातः दैनिक योगासन कक्षाएँ पुरुष वर्ग हेतु तथा रविवार सायंकालीन महिला वर्ग हेतु; ध्यानयोग सत्र रात्रि में पुरुष वर्ग हेतु; प्रार्थनाएँ, संकीर्तन तथा स्वाध्याय सभी के लिए; महिलाओं द्वारा एकादशी को बालकेश्वर मन्दिर में संकीर्तन, निःशुल्क साहित्य वितरण सेवा तथा होमियोपैथी चिकित्सा सेवा भी जारी रही।

कानपुर (उत्तर प्रदेश) : एकादशी दिवस को शाखा द्वारा भजन-कीर्तन, २५ मार्च को विशेष सत्संग, भक्तों द्वारा

रामायण एवं भगवद्गीता पाठ, इसके अतिरिक्त प्रातः-सायं दैनिक आरती चलती रही।

मोयरंग (मणिपुर): फरवरी मास में शाखा द्वारा नारानसेना शाखा के साथ प्रत्येक रविवार सम्मिलित सत्संग, शाखा सदस्यों द्वारा बच्चों के लिए उनके ही निवास स्थानों पर क्रमानुसार सत्संग आयोजित किये गये। महाशिवरात्रि पर्व सत्संग, अखण्ड कीर्तन एवं प्रार्थनाओं सहित भव्य रूप में मनाया गया।

माधवपटनम्, ई. गोदावरी (आन्ध्र प्रदेश): मार्च में शाखा द्वारा प्रत्येक बुधवार को शिवानन्द क्षेत्रम् सरपावरम् में सत्संग जिसमें भजन-कीर्तन एवं ध्यान किया गया; प्रत्येक शुक्रवार को काकीनाडा तथा प्रत्येक रविवार को माधनपतनम् में सत्संग; २३, उगादी दिवस को विशेष गुरुपादुका-पूजा की गयी।

राजघाट, एम. कान्तापली (ओडिशा): २१ से २९ फरवरी तक शाखा द्वारा भागवत सप्ताह, जिसके प्रारम्भ में १०८ कलश यात्रा तथा समाप्ति पर कलश विसर्जन किये गये।

रानीपुर, बी. एच. ई. एल. (हरिद्वार): मार्च में शाखा द्वारा एकादशी दिनों पर भगवद्गीता का स्वाध्याय, भजन एवं कीर्तन, भोजन वितरण, कुष्ठ बस्ती के अन्तेवासियों में औषधियों एवं वस्त्रों का वितरण तथा 'चिदानन्द कुष्ठ बस्ती'' में मुख्य द्वार-निर्माण किया गया।

सूनाबेडा, कोरापुट (ओडिशा): रविवार तथा गुरुवार को नियमित सत्संगों में भजन, कीर्तन, पूजा इत्यादि तथा बुधवार एवं शनिवार को मातृ वर्ग द्वारा फरवरी मास में कार्यक्रम चलते रहे, इसके साथ-साथ प्रत्येक गुरुवार को पादुका-पूजा; महाशिवरात्रि को रात्रिभर प्रहर पूजा, शिवमहिम्नस्तोत्र, महामृत्युंजय मन्त्र जप तथा अर्चना; रविवार के अतिकिक्त सभी दिन योगासन कक्षाएँ चलती रहीं।

स्टील टाउनशिप, राउरकेला (ओडिशा): फरवरी मास में शाखा द्वारा चार चल सत्संग तथा २० को महाशिवरात्रि पर गुरुपादुका-पूजा एवं सहस्रार्चना सहित भगवान् शिव का पूजन किया गया।

सालेपुर, कटक (ओडिशा): फरवरी मास में शाखा द्वारा प्रातः-सायंकालीन प्रार्थनाएँ एवं पूजाएँ, साप्ताहिक स्तोत्र पाठ विविध इष्ट देव के अनुसार, योग-ध्यान की मासिक गतिविधियाँ, साधना दिवस, अखण्ड जप, गीता पारायण, सुन्दरकाण्ड पाठ तथा शिवानन्द दिवस पर श्री गुरुपादुका-पूजा इत्यादि गतिविधियाँ नियमित रूप से चलती रहीं; रविवार को स्वामी शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय' द्वारा ११७ रोगियों को निःशुल्क औषध-वितरण, स्थानीय स्कूल-कालेजों के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए योग प्रशिक्षण तथा महाशिवरात्रि २० को विधिवत् पूजा एवं २६ को ६ घण्टे का अखण्ड महामन्त्र जप किया गया।

टस्कर टाउन, बेंगलूरु (कर्नाटक): गुरुवार को श्री गुरुपादुका-पूजा, मन्त्र जप, पारायण एवं स्वाध्याय सहित सत्संग; शुक्रवार को श्री विष्णु सहस्रनाम एवं ललिता सहस्रनाम सहित देवी पूजा; प्रथम रविवार को 'श्री ओडुगत्तुर स्वामिगल मठ' में सत्संग; तृतीय रविवार को अखण्ड कीर्तन; चतुर्थ रविवार को सत्संग हॉल में सत्संग तथा २४ मार्च से १ अप्रैल तक नवरात्रि महोत्सव में रामायण पाठ एवं श्री रामनवमी को समाप्ति इत्यादि शाखा की विशेष गतिविधियाँ मार्च मास में रहीं।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): १२ एवं २६ फरवरी को वृद्धाश्रम में मन्त्र पाठ तथा स्तोत्र एवं प्रार्थना, स्वाध्याय, भजन, आरती एवं प्रसाद वितरण सहित सत्संग किये गये।